ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

हिन्दी मासिक मुख पत्र

मास-फाल्गुन-चैत्र, संवत् 2072

मार्च 2016

अंक 127, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

धर्मवीर पं. लेखराम आर्य

भगतसिंह

ग्राम भिंभौरी (बेमेतरा) में दानवीर तुलाराम जी परगनिहा आर्य का मूर्ति अनावरण कार्यक्रम मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह के करकमलों द्वारा सम्पन्न

डी.ए.व्ही. मॉडल हा.से. स्कूल दुर्ग में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सभा प्रधान का उद्बोधन एवं स्कूल के छात्राएं कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

घनश्यामसिंह आर्य कन्या महाविद्यालय दुर्ग में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सभा प्रधान द्वारा ध्वजारोहण एवं मंच पर उपस्थित अतिथिगण

तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय दुर्ग में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सभा प्रधान द्वारा ध्वजारोहण एवं वार्षिकोत्सव में मंच पर उपस्थित अतिथिगण

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११७
दयानन्दाब्द - १९२

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - ११, अंक ९ ओ३म् मास/सन् - मार्च - २०१६

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं ,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१.	वेदामृत : नमः हमारी पुकार सुनो	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आइये बोधरात्रि पर आत्मविश्लेषण करें.	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	पृथिवी पर श्रेष्ठ धर्म वैदिक धर्म और श्रेष्ठ संगठन आर्यसमाज	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	ऐश्वर्यों की उपासना	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति	११
५.	"मंदिर–मस्जिदों का देश"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१३
६.	प्रेमप्रसार का पवित्र पर्व : होली	श्रीमती किरण खोसला	१४
७.	शरीर और उपकरण	अजय शर्मा	१५
८.	वैदिक राजनीति के मूल तत्व	स्वामी वेदमुनि परिव्राजक	१९
९.	वसंतोत्सव बनाम नवशस्येष्टि	श्रीमती सुकान्ती आर्या	२२
१०.	नास्तिक	ओमप्रकाश बजाज	२४
११.	पुण्य स्मृति : दाऊ तुलाराम जी परगनिहा	श्री दीनानाथ वर्मा	२५
१२.	पुण्य तिथि : धर्मवीर पण्डित लेखराम	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२७
१३.	बलिदानी : भगतसिंह		२८
१४.	होपियोपैथी से एलर्जी का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१२.	समाचार दर्पण		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

ब्रह्मप्रेरिका आरा

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

यां पूंषन् ब्रह्मचोदनीन्, आरां बिभर्ष्याघृणे।
तया समस्य हृदयम्, आरिख किकिरा कृणु॥

ऋग्. ६.५३.०८

ऋषिः भरद्वाजः **बार्हस्पत्यः** । देवता **पूषा** । छन्दः **अनुष्टम्** ।

● (आघृणे) हे दीप्तिमान् **(पूषन्)** पोषक परमेश्वर! (तुम) **(यां)** जिस **(ब्रह्मचोदनीं)** ब्रह्म-प्रेरिका **(आरां)** बेधनी को **(विभर्षि)** धारण करते हो, **(तया)** उससे **(समस्य)** सबके **(हृदयं)** हृदय को **(आरिख)** आलिखित कर दो, (और फिर) **(किकिरा)** उत्कीर्ण **(कृणु)** कर दो।

हे पूषन्! हे पोषक परमेश्वर! तुम आघृणि हो, ज्योति से देदीप्यमान हो। स्वभावतः तुम हमें भी सद्गुणों की ज्योति से प्रदीप्त करना चाहते हो। हमारे समाज में बहुत से लोग ब्रह्मत्व से हीन हैं, वे आस्तिक विचार-धारा में विश्वास नहीं करते। उनकी दृष्टि में यह संसार प्रकृति का ही खेल है, इसकी व्याख्या के लिए बीच में परमात्मा और जीवात्मा को लाना व्यर्थ है। वे वेदादि शास्त्रों पर और धर्म-कर्म, दान-पुण्य आदि पर भी आस्था नहीं रखते। उनके मत में प्रकृति या अपनी इच्छा जो कुछ कराती है, वह मनुष्य को करते जाना चाहिए। उनका कथन है कि जैसे गेंद को भूमि पर जितना अधिक जोर से मारते हैं, उतना ही अधिक वह ऊपर उछलती है, वैसे ही इच्छा को संयम के नाम पर जितना दबाते हैं, उतने ही प्रचण्ड रुप से वह उभरती है, अतः इच्छा की पूर्ति करते जाना ही मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है। परन्तु यह दृष्टिकोण समाज के वातावरण पर एक भयंकर प्रभाव छोड़ता है। इस दृष्टि बिन्दु के व्यक्ति प्रायः पाणि या स्वार्थ परायण होते हैं। उन लोगों में हे पूषन्! तुम ब्रह्मत्व का दीप्ति को, आस्था की ज्योति को, प्रदीप्त करो। हे पूषा देव! तुम्हारे पास ब्रह्मप्रेरिका आरा है, ब्रह्मभाव को प्रेरित करने वाली बेधनी है। उस बेधनी से तुम समाज के समस्त नास्तिक, अश्रद्धालु, असहृदय व्यक्तियों के हृत्पटल पर आस्तिकता के और आस्तिकता के अनुवर्ती सत्य, सहृदयता, दान आदि गुणों के अक्षर लिख दो। लिखे हुए वे अक्षर कहीं मिट न जाएं, इसलिए उन अक्षरों को उत्कीर्ण करके पक्का कर दो। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण समाज ब्रह्मपरायाण, आत्मदर्शी, आस्थावान् और पारस्परिक स्नेह-सौहार्द से युक्त बन जाए। हे प्रभु! हमारे राष्ट्र को ब्रह्म-राष्ट्र बना दो।

संस्कृतार्थ :- १. घृणिः ज्योतिः (निघं १,१७), आधुणिः आगतघृणिः आगतदीप्तिः। घृ क्षरणदीप्त्योः। २. लिख अक्षरविन्यासे, रलयोः अभेदः अथवा रिख गती। ३. किकिरा किकिरम्। विभक्ति को आ।

सम्पादकीय

आइए बोधरात्रि पर आत्मविश्लेषण करें

फरवरी एवं मार्च के माह में हिन्दी माह की तिथि पर आधारित किसी एक दिनांक को भारत सरकार ने महर्षि दयानन्द की जयन्ती घोषित की हुई है जो कि इस बार १४ फरवरी को मनाई जा चुकी है। इस बहाने चलो शासन प्रशासन के लोग भी अपने स्तर में याद कर लेते हैं, किन्तु आर्यसमाज केवल जन्म दिवस तक सीमित नहीं रहता इसलिए यहाँ ऋषि की बोधरात्रि भी मनाने की पावन परम्परा चली हुई है। इस अवसर पर आइए हम देखें कि बोध की दिशा में हम कहाँ तक पहुंचे। इस युग के अद्वितीय समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज जन कल्याण के कार्यों के कारण ही इतना प्रसिद्ध है। आरंभ में आर्यसमाज के नेताओं में आर्य समाज के छठे नियम-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है का खूब पालन किया और समाज को इस कसौटी पर ही खरा उतरवा दिया। महर्षि दयानन्द की अपनी इच्छा परमानन्द की प्राप्ति थी और इसके लिए वह मूलशंकर बालक घर से भाग निकला। मूलशंकर ने उस समय अनेकों कष्टों को बड़ी प्रसन्नता से झेला पर्वतों की कन्दराओं से लेकर भंयकर निर्जन वनों मे विहार करने के पश्चात मूलशंकर को मथुरा में ही सच्चे गुरु के दर्शन हुए। संन्यास ले लेने पर वे मूलशंकर से स्वामी दयानन्द सरस्वती हो गए।

अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को लिखकर स्वामी दयानन्द लोगों की कड़ी आलोचना के शिकार बन गये, परन्तु शीघ्र ही उन द्वारा लिखित उस समय के वायसराय ने सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजीअनुवाद करवा कर इसका अध्ययन किया और भविष्यवाणी की थी कि यदि इस ग्रन्थ का प्रचार होता रहा तो अंग्रेजो को सौ वर्षों के भीतर-भीतर इस देश भारत को छोड़ देना पड़ेगा। यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और इस ग्रन्थ के छपने के सौ वर्षों से पहले ही हमारा देश स्वतंत्रता प्राप्त कर गया इस विषय में यह बताना आवश्यक है कि स्वतंत्रता-सेनानियों में लगभग 80 % व्यक्ति आर्य समाजी ही थे। यह हम नहीं कह रहे, कांग्रेस के इतिहास लेखक श्री पट्टाभि सीतारमैया ने स्वयं लिखा है।

जब ब्रिटिश सरकार ने भारत में वैदिक राष्ट्रगीत नामक पुस्तक जब्त कर ली तो स्वर्गीय दामोदर सातवलेकर जी ने सरकार को चेतावनी दी कि मेरी समझ में नहीं आया कि वेद की एक छोटी सी पुस्तक के लिए भारत मे टिका रहना असम्भव हो जाएगा।

भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री मूलचन्द जान एडवोकेट का कहना था- कि जिस गांव में हमें एक भी आर्य समाजी मिल जाता था, वहां हमारा स्वतंत्रता का नारा कभी दब नहीं पाता था, और ऐसा लगता था कि मानो दयानन्द स्वामी ने हमारे आने से पूर्व ही हमारे कार्य की पृष्ठभूमि वहां बना रखी है।प्रसिद्ध स्वतंत्रता-सेनानी वीर भगतसिंह, श्री चन्द्रशेखर,रामप्रसाद बिस्मिल आदि हुतात्मा आर्य समाज की ही उपज थे। शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय भी जो स्वतंत्रता-सेनानियों के अग्रणी थे, आर्य समाज को ही अपनी धर्म की माता मानते थे। और महर्षि दयानन्द को धर्मगुरू मानते थे। विधवा-विवाह अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि सामाजिक हित की नई नीतियाँ लागू करके स्वामी दयानन्द ने भारत के जनजन में नवचेतना भर दी। इस प्रकार समस्त समाज में नवजागरण को फूंककर उन्होने जो स्थान पाया, वह दयानन्द को जाति-उद्धारक, युगप्रर्वतक बनाने में पूर्णतया पर्याप्त है। स्वयं गुजराती होने पर भी हिन्दी का प्रचार -प्रसार करना उनके राष्ट्रवादी होने का प्रबल प्रमाण है। आने वाली पीढ़ियाँ शायद ही यह मान पाएंगी कि एक लंगोटधारी दयानन्द अकेले होने पर भी देश में एवं संसार में इतना जल्दी परिवर्तन लाने में कैसे सफल रहे यदि आज की तुलना में आपके सामने सौ वर्ष पहले वाला चित्र आ सके तो आप आसानी से अन्दाजा लगा पाएंगे कि पिछले सौ वर्षों में यदि महर्षि दयानन्द द्वारा सामाजिक हित में प्रचार-कार्य न हो पाता, तो शायद आज भी हम पिछड़ें हुए ही होते।

आज कहीं-कहीं आर्य समाजों में केवल धार्मिक परिपाटी को ही चलाते जाना काफी समझा जाता है। सामाजिक जागृति, देश और विश्वकल्याण को लक्ष्य मानकर सामाजिक सुधार का कार्य करने वाले आर्य समाज वास्तव में ही कम होते जा रहे हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे आर्यसमाज भी एक रूढ़िवादियों का टोला बन ता जा रहा है। इस विडम्बना के विरुद्ध चुनौती देनी होगी, अन्यथा वे लोग जिनके दिल में दयानन्द और आर्य समाज के प्रति श्रद्धा है वे लोग शीघ्र ही निष्क्रिय हो जाऐंगे। कुछ लोग यह भी भूल जाते है कि आर्य समाज एक सम्प्रदाय नहीं आन्दोलन है और आन्दोलन वही कहला सकता है जो किसी न किसी रूप में गतिमान् रहे। यह बात सत्य है कि आर्यसमाज की काफी मान्यताओं को प्रशासन ने स्वयं अपना लिया है। लेकिन फिर भी आर्यसमाज की कई ऐसी मान्यताएं और कार्यक्रम शेष है जिनकी ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।अतः विश्व-उत्थान के लिए धार्मिक कुरीतियों,नरबलि,पशुबलि,रंगभेद आदि को दूर करने का विशाल कार्यक्षेत्र हैं। अपने ही देश में विधर्मियों द्वारा फैलाई हुई अराष्ट्रीयता को दूर करना क्या कम है? आज भारत के चारों ओर सीमाओं के आस पास विधर्मी अड्डे पनप रहे हैं इन्हें केवल आर्यसमाज ही गिरा सकता है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भारत में कानूनी रूप से इन पर अंकुश लगाना आसान नहीं है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने ज्वालापुर गुरूकुल में भाषण देते हुए यह चेतावनी दी थी कि भविष्य में वे सब धर्म नष्ट हो जावेंगें जो तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरेंगे और केवल वही धर्म बचा रह सकता है जिसमें युगधर्म बनने की क्षमता है। अब प्रश्न होता है कि कौन सा धर्म युग धर्म बन सकता है। उत्तर स्पष्ट है कि वैदिक धर्म ही युगधर्म बन सकता है,जो कि सदैव ही तर्क की कसौटी पर खरा उतरा है। यह वही धर्म है जिसका पुनरूद्धार कर स्वामी दयानन्द ने समयानुसार मान्यताओं को बदलने का साहस दिया था। जिसका बीड़ा आर्य समाज ने उठाया

है। अब आवश्यकता है महर्षि दयानन्द के कार्यो को गति देने की। अतः वर्तमान आर्यसमाज आन्दोलन के रूप में सभाओं द्वारा संगठित होती हुई तैयार हो। कोई भी आर्य समाज किसी एक सभा से विलग न हो। प्रत्येक आर्य समाज पर किसी न किसी सभा का अंकुश हो ताकि अवांछनीय एवं अवसर वादी लोग केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रभु बनकर बैठे न रहें। इसलिए हर समाज को किसी सभा से संयुक्त होना आवश्यक है समाज की प्रत्येक सम्पत्ति सभा के नाम पर हो और प्रत्येक आर्य समाज में प्रतिदिन वेद मंत्रों का गायन हो। कई मंचों से अन्य धर्मों का खुल्लम-खुल्ला प्रचार हो रहा है। इस ओर सभाओं को विशेष ध्यान देने की जरूरत है जिससे संसार के कोने कोने में आर्यधर्म का संदेश भी पहूंच सके और **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का नाद विश्व में गूंज सके। शिवरात्रि के दिन का आर्य समाज में विशेष महत्व है सारा देश इसे शिवरात्रि के रूप में मनाता है किन्तु आर्य समाज इसे बोध रात्रि के रूप में मनाता है, क्योंकि यह वही शिवरात्रि है जिसने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बनने की प्रेरणा दी।

साधारण रोगियो, वृद्धों, शवों, मुर्दो को ले जाते हुए रथियों और सन्यासियों को सहस्त्रों जन प्रतिदिन देखते हैं। किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को वह बोध प्रदान किया जिसका प्रभाव संसार के आधे मनुष्यों पर अब तक विद्यमान है। इन्हीं दृश्यों से उद्भूत बुद्ध की दया ने करोड़ों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करुणा और सहानुभूति का स्त्रोत बहाया था। वृक्षो से फल को जमीन पर गिरते हुए प्रतिदिन लाखों लोग देखते हैं किन्तु न्यूटन की दिव्य दृष्टि ने वृक्ष से गिरते सेब के फल को देखकर संसार में गुरूत्वाकर्षण का वैज्ञानिक सिद्धान्त दिया। भोजन बनते समय हंडी के ऊपर रखे ढक्कन को भाप के दबाव से हिलते हुए लाखो लोगों ने माताओं ने अपने रसोई में देखा होगा और देख भी रहें हैं। किन्तु जेम्सवाट की नजरों ने जब दृश्य देखा तो वाष्प इंजन की परिकल्पना साकार हो उठी। इसी प्रकार अनंत काल से शिवभक्ति भी शिव लिंग पर पूजा के दौरान चढ़ाए मिष्ठानों पर उछलकूद मचाते हुए चूहों को भी हजारों बार देखा होगा किन्तु कभी किसी के मन में कभी कोई बात नहीं उठी किन्तु वही दृश्य जब गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक छोटे से गांव में निवास कर रहे औदिच्य ब्राहाण कर्षणजी का महज १४ वर्ष का किशोर मूलशंकर जिसने शिवरात्रि की रात को भूखा रहकर आँखों में पानी का छिंटा दे देकर जागते हुए व्रत को इसलिए रखा कि उसे इस रात प्रलयंकर कैलाशवासी शिव का दिव्य दर्शन प्राप्त होगा किन्तु यह क्या ? बालमन में शिवलिंग पर चूहों के उत्पात से बेखबर शिव को देखकर नकली शिव का चिन्तन ढूढ़कर असली की खोज में घर परिवार का त्याग कर नदी पहाड़ पर्वत ग्राम नगर शहर जंगल सब छान डाला। अन्त में सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त कर संसार के इतिहास में जो योगदान प्रस्तुत किया वह स्वर्णाक्षरों में अंकनीय है आइये ! इस बोध पर्व पर हम भी अपना कर्त्तव्य बोध प्राप्त कर ऋषिमिशन को आगे बढ़ा अपने जीवन को कृतार्थ करें। वेद भगवान ने सन्देश दिया - **यो जागारः तमृचः कामयन्ते.** जो कर्त्तव्य के प्रति जागरुक है वस्तुतः ऋचाएँ उन्हीं की कामना करती है आइये, जागें।

- आचार्य कर्मवीर

'पृथिवी पर श्रेष्ठ धर्म वैदिक धर्म और श्रेष्ठ संगठन आर्यसमाज'

विचारात्मक

– मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का अस्तित्व सत्य है। किसी भी विषय में सत्य केवल एक ही होता है। जिस प्रकार दो व दो को जोड़ने से चार होता है, कुछ कम व अधिक नहीं हो सकता इसी प्रकार ईश्वर, जीव, प्रकृति, सृष्टि, धर्म, समाज, मानवीय आचार व विचार आदि सिद्धान्त व मान्यतायें भी भिन्न–भिन्न न होकर सर्वत्र एक समान ही होनी चाहिये। यदि यह पूछा जाये कि वेद पर आधारित वैदिक धर्म और आर्यसमाज संगठन की प्रमुख विशेषता क्या है तो इसका एक वाक्य में उत्तर है कि यह धर्म व संगठन सत्य पर आधारित है। दूसरा उत्तर यह है कि वैदिक धर्म व आर्य समाज का संगठन प्राणीमात्र के हित व कल्याण के लिए हैं। यह कभी किसी के अकल्याण की बात न सोचता है और न ही करता है। एक अन्य उत्तर यह भी हो सकता है कि यह दोनों ज्ञान पर आधारित है तथा अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीति, रूढ़ि, मिथ्या परम्परा आदि से पूर्णतः रहित हैं। आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद मन्त्रों के अर्थ वही स्वीकार्य होंगे जो सत्य हों व मानव सहित प्राणीमात्र के हित के लिए हों। यदि कहीं कोई भ्रान्ति हो तो उसे इस कसौटी पर कस कर संशोधित कर लेना चाहिये। अन्य मतों, सम्प्रदायों वा धर्मों में सत्य, तर्क व युक्ति को वैदिक धर्म की भांति महत्व नहीं दिया जाता। तर्क व युक्ति से सिद्ध बातें ही सत्य हुआ करती हैं। इसी से ज्ञान की उन्नति व अज्ञान की निवृत्ति होती है और यही मनुष्य के सुख व उन्नति का मुख्य कारण व आधार है।

वैदिक धर्म का आरम्भ कब, किसने व क्यों किया? इस प्रश्न पर विचार करना भी समीचीन है। इसका उत्तर है वैदिक धर्म का आरम्भ चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के ज्ञान से सृष्टि के आरम्भ में हमारे पहली पीढ़ी के ऋषियों ने किया। यह सभी ऋषि ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का साक्षात व यथार्थ ज्ञान रखने के साथ–साथ वेदों के पूर्ण वेत्ता व विद्वान थे। वेदों में जो मन्त्र व उनमें अलौकिक ज्ञान है वह किसी मनुष्य व ऋषि द्वारा रचित, निर्मित व उत्पन्न नहीं है अपितु यह वेद, इसके मन्त्र व ज्ञान इस सृष्टि के रचयिता व संचालक ईश्वर का निज ज्ञान है जो वह सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न आदि मनुष्यों, स्त्री व पुरूषों को, उनके कल्याणार्थ देता है। चार वेदों का यह ज्ञान सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा द्वारा स्थापित किया था। ईश्वर ने ही जीवात्मा को मनुष्य शरीर दिये, इन शरीरों में व्यवहार के लिए पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां व बुद्धि आदि प्रदान करने सहित सृष्टि के आरम्भ में वेदमन्त्रों का उच्चारण, परस्पर संवाद एवं व्यवहार करना भी सिखाया है। तर्क व विवेचन से यह सिद्ध है कि यदि ईश्वर इस सृष्टि के आदि मनुष्यों को वेदों का ज्ञान न देता, जिससे कि वह परस्पर संवाद आदि कर सके और सत्य व असत्य में भेद कर सकें, तो उनका जीवन व्यतीत करना संभव नहीं था। मान लीजिए हमें बोलना नहीं आता और हमारे आसपास के अन्य मनुष्यों को भी नहीं आता। हममें ज्ञान भी नहीं है। ऐसी स्थिति में हम क्या कोई व्यवहार कर सकते हैं? इसका उत्तर है कि हम परस्पर किसी प्रकार का कोई व्यवहार नहीं कर सकते। व्यवहार के लिए किसी न किसी भाषा सहित उठने, बैठने, चलने, फिरने, सोचने, समझने, खाद्य–अखाद्य पदार्थों का ज्ञान, भोजन की विधि, मल–मूत्र विसर्जन आदि सभी आवश्यक क्रियाओं का ज्ञान आवश्यक है। अतः सृष्टि की रचना के बाद अमैथुनी सृष्टि में मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही उनको ईश्वर से ज्ञान मिलना तर्क संगत है। यही ज्ञान उसे परमात्मा से मिलता है और इसी का नाम वेद है।

परमात्मा प्रदत्त इसी ज्ञान से प्रथम चार ऋषियों से अध्ययन, अध्यापन, शिक्षा, प्रचार, प्रवचन व उपदेश की परम्परा आरम्भ हुई और सभी लोग ज्ञान सम्पन्न हुए। यह वेद ज्ञान आज भी अपने मूल स्वरूप में सुरक्षित है। महाभारत के बाद यह ज्ञान लुप्त हो गया था जिसके कारण देश व विश्व

में अज्ञान का घोर अन्धकार फैला और अज्ञान पर आधारित अनेक मत व मतान्तर उत्पन्न हुए। महर्षि दयानन्द, जो कि वेदों के उच्च कोटि के मर्मज्ञ विद्वान थे, उन्होंने चारों वेदों की परीक्षा कर घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेद का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सभी मनुष्यों वा आर्यों का परम धर्म है। अपनी इस घोषणा को उन्होंने सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अनेक ग्रन्थों को लिखकर पुष्ट किया। उन्होंने वेदों के सभी मन्त्रों का भाष्य करना आरम्भ किया था। ऋग्वेद आंशिक व यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य उन्होंने किया है। आकस्मिक मृत्यु के कारण वह वेदों के भाष्य को पूर्ण नहीं कर सके। उन्होंने जितने ग्रन्थ लिखे और उनकी जो शिक्षायें, उपदेश, पत्र, पुस्तकें, शास्त्रार्थों के विवरण आदि उपलब्ध हैं, उनसे वैदिक धर्म का विस्तृत सत्य स्वरूप प्रकट होता है। इस पर विचार करने पर यह पूर्व व पश्चात प्रचलित सभी धर्मों में श्रेष्ठ सिद्ध होता है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने प्रमुख सभी मतों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है जो वेद को विश्व के सभी मनुष्यों के धर्म की उनकी मान्यता को पुष्ट करता है।

वेद धर्म की पहली विशेषता तो यह है कि वेद की सभी मान्यताओं तर्क व युक्ति की कसौटी पर सत्य सिद्ध होती हैं। वेद, तर्क व युक्तियों से डरता नहीं अपितु उनका स्वागत करता है। वेदों की सभी मान्यतायें ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य सिद्ध हैं। ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो स्वरूप वेदों में उपलब्ध होता है वह अपूर्व व आज भी सर्वोत्तम हैं एवं विवेक पर आधारित है। अन्य मतों में यह बात नहीं है। वेदाधारित ईश्वरोपासना वा पंचमहायज्ञ विधि में भी मुनष्यों के सर्वोत्तम कर्तव्यों का विधान किया गया है जिससे मनुष्य की व्यक्तिगत व सामाजिक उन्नति होने के साथ सभी प्राणियों का कल्याण होता है। कर्म–फल सिद्धान्त भी वेद प्रदत्त ज्ञान के अर्न्तगत ही सत्य सिद्धान्त है जिसके अनुसार मनुष्य जो शुभ व अशुभ कर्म करता है उसका फल उसे जन्म व जन्मान्तरों में अवश्य ही भोगना होता है। अशुभ कर्मों का त्याग व शुभ कर्मों को करके तथा साथ हि वेदविहित ईश्वरोपासना, यज्ञादि कार्य, मातृ–पितृ–आचार्यों की सेवा, परोपकार व विद्यायुक्त कर्मों को करने से ही मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। यह वैदिक धर्म की विशेषता व युक्तिसंगत सिद्धान्त है।

आर्यसमाज वेदों के सत्य ज्ञान को संसार में फैलाने के लिए स्थापित किया गया एक संगठन है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में की थी। इस संगठन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द के समय में वैदिक धर्म का संगठित रूप से प्रचार करना था और उनके बाद भी **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** (संसार को श्रेष्ठ बनाओं) के लक्ष्य की प्राप्ति तक संसार में वेदों का प्रचार अबाधित रूप से हो, यह मुख्य प्रयोजन था। महर्षि दयानन्द ने पृथिवी के सभी मनुष्यों के कल्याणार्थ वेदों की सार्वभौमिक व सार्वजनीन मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, ऋग्वेद आंशिक व यजुर्वेद सम्पूर्ण वेदभाष्य आदि ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के अनेक भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं।

ग्रन्थ लेखन के इस स्थाई कार्य के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने देश के प्रमुख स्थानों पर जाकर वैदिक विचारध ारा का प्रचार किया और सभी मतों को अपनी–अपनी धर्म व समाज विषयक मान्यताओं पर शंकाओं का निवारण करने का अवसर दिया। प्रतिपक्षी मतों के आचार्यों को उन्होंने शंका समाधान का अवसर देने के साथ शास्त्रार्थ करने की चुनौती भी दी और अनेक प्रमुख मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ कर वैदिक मत की श्रेष्ठता, ज्येष्ठता, ज्ञानसम्पन्नता व सत्यता को प्रतिपादित व सम्पादित किया। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द ने उदयपुर, शाहपुर, जोधपुर आदि अनेक देशी रियासतों के शासकों को भी अपना शिष्य व अनुगामी बनाया और वहां वैदिक मत की स्थापना में आंशिक सफलतायें प्राप्त कीं। अनेक पादरी व मुस्लिम विद्वान भी उनकी मित्र मण्डली में थे जो उनकी सभी मतों के अनुयायियों के प्रति सदाशयता के उदाहरण हैं। स्वामी दयानन्द जी ने अनेक अवसरों पर हिन्दी के प्रचार व प्रसार सहित गोरक्षा आदि आन्दोलनों का सूत्रपात भी किया जबकि ऐसे कार्य व उदाहरण पूर्व इतिहास में कहीं उपलब्ध नहीं होते। इस प्रकार से प्रचार करते हुए उन्होंने वेदों के ज्ञान को फैलाकर विश्व के मनुष्यों को प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी वैदिक धर्म की स्थापना व विश्व समुदाय में इसकी स्वीकृति में यथाशक्ति योगदान किया।

ईश्वर इस सृष्टि के सभी मनुष्यों व पूर्वजों का आदि गुरू है। इस सृष्टि में अब तक उत्पन्न हुए सभी आचार्य, विद्वान व ऋषि–मुनि ईश्वर के शिष्य सिद्ध होते हैं जिन्होंने अपने–अपने काल में ईश्वर द्वारा आदि ऋषियों को प्रदत्त वेद ज्ञान को ही जाना, समझा व प्रचारित किया। जिस प्रकार सृष्टि की आदि में ईश्वर अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों का उपदेश देने से उनका गुरू व चारों ऋषि ईश्वर

के शिष्य सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार से चार ऋषियों से आरम्भ आचार्य–शिष्य परम्परा के अनुसार उनके बाद के सभी आचार्य उसी ईश्वरीय ज्ञान के प्रचारक व प्रसारक सिद्ध होते हैं। सच्चा आचार्य माता–पिता के समान होता है। इस प्रकार से संसार में जितने भी सच्चे उपदेशक, ज्ञानी व ऋषि आदि हुए हैं वह–वह ज्ञानदाता व ज्ञानप्रसारक होने से अपने शिष्यों के मातृ–पितृ तुल्य ही रहे हैं। उसी परम्परा व ज्ञान प्रवाह का परिणाम ही आज का अन्यान्य विषयक ज्ञान–विज्ञान है। यदि उन्होंने वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रखते हुए उपदेश आदि से उसका देश–देशान्तर में प्रचार न किया होता तो आज का मानव ज्ञान–विज्ञान सम्पन्न न हो पाता। संसार के सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह ज्ञान विज्ञान का क्षेत्र हो या मत–मतान्तरों का, उनकी सभी मान्यताओं वा सिद्धान्तों की परीक्षा कर उनमें विद्यमान सत्य को ही अपनायें और मिथ्या का त्याग करें। मत–मतान्तरों में निहित अज्ञान व भ्रम की बातें कि जिससे मनुष्यों में समरसता में बाधा पहुंचती है, उनका त्याग करें। सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग ही वैदिक धर्म व आर्यसमाज का मुख्य प्रयोजन है। आर्यसमाज सत्य का पोषक व प्रचारक है और विश्व के सभी मनुष्यों में वेदों के सत्य ज्ञान का प्रचार कर उनका कल्याण करना चाहता है। वैदिक ज्ञान ही एकमात्र मनुष्य के अभ्युदय व निःश्रेयस क कारण है, यह निर्विवाद सत्य है। आर्यसमाज के संगठन में कुछ दुर्बलतायें हो सकती हैं परन्तु विश्व के कल्याण की दृष्टि से आर्यसमाज की अवधारणा व उसका प्रभावशाली सशक्त रूप ही मानवता के हित में है। वेद और आर्यसमाज विश्व में मानवता को विद्यमान रखने की गारण्टी है। इसके साथ विश्व के सभी मनुष्यों को अभ्युदय व निःश्रेयस के मार्ग पर अग्रसर करने का एकमात्र संगठन हैं। इसके महत्व को जानकर सभी मनुष्यों को इसे सहयोग देना चाहिये और अपनी सर्वांगीण उन्नति करनी चाहियें।

पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001

जीवन का वास्तविक उद्देश्य

आहारार्थे कर्म कुर्य्यादनिन्द्यं कुर्यादाहारं प्राणसन्धारणाय ।
प्राणाः सन्धार्या तत्वजिज्ञासनाय तत्वं जिज्ञास्यं येन भूमौ न जन्म ॥

भावार्थ - आखिर मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ? **पुनरपि जननं पुनरपि मरणं**- तो सभी सांसारिकों का होता ही है। कुछ तो सोचिए भला ? क्या - आपने कभी विचार किया ? यह कटु सत्य है कि आहार की आवश्यकतार्थ मनुष्य को श्रेष्ठ जीविकोपार्जन के लिए दत्तचित्त एवं तत्पर रहना चाहिए। परन्तु निन्द्य कर्मों के द्वारा ही अजीविका को अपनावे यह ठीक नहीं। यदि पाप अन्याय छल-कपट से धन कमायेगे तो यह वह कभी सुखदायी नहीं होगा उससे अशान्ति ही मिलेगी। और आहार भोजनादि की आवश्यकता मनुष्य के लिए क्यों है ? इसलिए न कि - प्राणों का धारण ही अन्न से किया जाता है। "**अन्नं वै प्रजापतिः**" अन्न को विधाता कहा गया है यदि अन्न ही नहीं ग्रहण किया जाए तो सांसारिक प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अतएव उदरपोषणार्थ, प्राणसंधारणार्थ मनुष्य आहार का सेवन अवश्य करें। पुनः प्रश्न उठता है कि - प्राणों के सन्धारण का क्या लक्ष्य है ? क्या भोगेच्छा तृष्णा दुर्वासनाओं के परिसञ्चालनार्थ प्राणों का संरक्षण किया जावे ? नहीं श्री कविराजजी कहते हैं कि प्रभु के परम धाम की जिज्ञासार्थ ही प्राणों का सन्धारण अनिवार्य एवम् आवश्यक है। एतदर्थ ही प्राण अभीप्सित है ? तत्व को जान लेने के पश्चात् पुनः पुनः इस संसाररुपी कटघरे में मनुष्य नहीं बंधता। तत्व जिज्ञासा के बाद तो मनुष्य को मोक्ष ही मिलता है। जिससे कि -वेदान्त का चरम लक्ष्य "**न च पुनरावर्त्तते न च पुरावर्त्तते की सिद्धि होती है।**" क्या आप उपर्युक्त उद्देश्य से अपने जीवनोद्देश्य की सार्थकता पर तनिक भी विचार कर सकेंगे ?

- सुभाषित सौरभ

मनुष्य को दिन में ऐसा कार्य करना चाहिये कि रात में सुखपूर्वक सो सके। रात को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये कि सुबह किसी को मुंह ना दिखा सके।

विवेचनात्मक ऐश्वर्यों की उपासना

लेखक : मनुदेव 'अभय', विद्यावाचस्पति, एम.ए.

ओ३म् रायः समुद्रः चतुरो अस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणः ।। ऋग्वेद पृ. ९/३३/६

पदार्थ - हे सोम, सकलैश्वर्य प्रदाता परमेश्वर। (अस्मभ्यं=हम सभी को, रायः= ऐश्वर्य के सहस्रिणः=सहस्रो, हजारों से भरपूर, चतरः=चार (४), समुद्रान=समुद्रों, सागरों को, विश्वतः=चारों ओर से (मेरी/हमारी) प्रवाहित कीजिए। अथवा बड़ा अनुग्रह होगा। ऋग्वेद का मंत्र बहुत लोकप्रिय तथा वह श्रुत है। इस पर प्रत्येक स्वाध्यायी का भाव भलीभांति हृदयगम करने की आवश्यकता है। वैदिक संस्कृति में ऐश्वर्य का अर्थ - ऐसी विशेष सम्पदा जिसके द्वारा मनुष्य का इहलौकिक तथा पारलौकिक जीवन सुखद हो। वैदिक जीवन में ४ अरब ३२ करोड़ का दीर्घकालीन मोक्ष और प्रभु सान्निध्य का अलौकिक आनन्द प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य है। यह तभी सम्भव है जब आत्मा का चौमुखी विकास होता है।

(१) सबसे प्रमुख ध्यान रखने योग्य यह बात है कि जब तक प्रभु की कृपा नहीं होगी, तब तक कोई भी ऐश्वर्य प्राप्त नहीं हो सकता। उसकी कृपा कम करने के लिये उनका सूनवेदऽग्ने बनना अर्थात् उसका पुत्र नहीं, सुपुत्र बनना नितांत आवश्यक है। कोई भी पिता चाहे उसकी कितनी सन्तानें क्यों न हो, वह अपने सुसन्तान, सद्गुणों से पूर्व योग्यतम सन्तान को ही अपना सम्पदा सौंपता है।

अतः सम्पदा, मोक्ष अथवा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए परमात्मा का आज्ञाकारी पुत्र (सन्तान) बनना अत्यावश्यक है। कहा भी गया है आज्ञाकारी पुत्र (सन्तान) बनना आवश्यक है। कहा भी गया है कि फर्स्ट डिजर्व, देन डिजायर। योग्य, सक्षम बनने के पश्चात् ही किसी प्राप्तव्य की प्राप्ति की सम्भावना होती है। इस प्रकार प्रभु की कृपा अर्जित करना, यह भी प्रथम कोटि का ऐश्वर्य है।

(२) भौतिक सम्पदा संबंधी ऐश्वर्य - वैदिक धर्म में 'धन' की कभी उपेक्षा नहीं की गई है। वैदिक भाषा में 'धन' को राशि कहा गया है। पवित्र स्रोतों, साधनों तथा करणों से उपार्जित धन को राशि कहा जाता है। लौकिक भाषा में इसे अर्थ तथा इससे संबंधित शास्त्र को अर्थशास्त्र कहा जाता है। अर्थ के बिना सब व्यर्थ है तथा यह अर्थ ही असंख्य अनर्थों की जड़ है। विवेकी इसी अर्थ की सहायता से 'देवता' कोटि में तथा अर्थ - दस्यु बनने पर 'राक्षस' कोटि में अपने आपको खड़ा कर लेता है। इसके ही द्वारा मनुष्य इष्ट और समष्टि का अत्यधिक भला कर सकता है, तो स्वार्थी बन वह अपने तथा विश्व-जीवन को नर्कमय बना देता है। इसलिए इस अनिवार्य ऐश्वर्य की प्राप्ति के पश्चात् इसका उपभोग और दान (कल्याण) में लगाना चाहिए, अन्यथा यही धन सैकड़ों भविष्यों तथा नर्क का कारण बन जाता है। जीवन यात्रा में 'धन' पर सहाय तत्त्व है। अतः परमात्मा से भरपूर धन की (ऐश्वर्य) की प्रार्थना करना चाहिए।

(३) ज्ञान ऐश्वर्य - वैदिक शब्दावली में ज्ञान (विद्) का नाम ही वेद है। वेद (चारों वेद) ही विश्व के सभी ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश पुञ्ज है। सृष्टि जिसके द्वारा वह अपने अभीष्ट लक्ष्य-मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा से प्राप्त वेद का ज्ञान चारों ऋषियों के हृदयों में उद्भासित हुआ, तत्पश्चात् इन ऋषियों ने (मंत्र द्रष्टा) यह ज्ञान 'ब्रह्म' को भी 'श्रुति' के रूप में दिया, जो दिक्-दिगन्तर में फैलता गया। प्रत्येक मनुष्य मात्र को चारों वेदों का, अन्यथा किसी एक वेद का ज्ञान, स्वाध्याय और प्रसारक-प्रचारक अवश्य बनना चाहिए। यह क्षमता या गुण भी एक श्रेष्ठतम ऐश्वर्य है।

(४) पुरुषार्थ - कर्म ऐश्वर्य - पौरुषवान (बलवान) ही पुरुषार्थी होता है। इसके लिए सर्वप्रथम परमात्मा का शरणार्थी फिर पुरुषार्थी और तत्पश्चात् परमार्थी बनने का प्रयत्न करना चाहिए। अकर्मण्य और आलसी, दरिद्री व्यक्ति के लिये यह संसार नहीं है। पुरुषार्थ का एक अंग 'श्रम' है। जो बिना श्रम या पुरुषार्थ के भोजन खाता है, वेद उसे कृतघ्न कहकर पापी,

पाप रखने वाला कहते हैं। पुरुषार्थ, श्रम, परिश्रम ही भगवान की पूजा और अराधना है। पुरुषार्थ की सीढ़ियों पर चढ़ कर मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। एक विद्वान् के मतानुसार शरीर के लिए अर्थ, मन के लिए काम, बुद्धि के लिए धर्म तथा आत्मा के लिए मोक्ष का भोजन है। इस प्रकार पुरुषार्थ रूपी ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए।

(५) सामाजिक ऐश्वर्य - मनुष्य एक सामाजिक-प्राणी है। यह समाज के लिए और समाज इसके लिये है। इसके साथ सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य करना अपरिहार्य है। वैदिक व्यवस्था के अनुसार समाज में बुद्धि बल, शारीरिक-बल, अर्थ-बल तथा सेवा-बल विद्यमान रहता है। विश्व की भिन्न-भिन्न भाषाओं में चाहे इसकी अलग-अलग संज्ञाएं हो, परन्तु वैदिक भाषा में इसे क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहते हैं। शूद्र का अर्थ -शू-आन्न अर्थात् जो क्षण भर में भावुक हो कर 'द्र' द्रवित हो जाये, पिघला जाये उसे आधुनिक शब्दावली में केरियर का अर्थ वरणीय अथवा वर्ण कहा जाता है। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् कैरियर या वर्ण (प्रोफेशन) का चयन एक खुली प्रतियोगिता है। सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट अर्थात् सक्षमता के अनुसार जीविका है। योग्यतम को योगाक्ष्म और श्रेष्ठ जीविका साधन भी एक महान ऐश्वर्य है।

(६) मानव जीवन में श्रेष्ठ आश्रम व्यवस्था - इसे एक ऐश्वर्य माना गया है क्योंकि यह शरीर के क्रमिक विकास तथा अवस्था से संबंधित है। बाल्य, कौमार्य, गृहस्थ तथा अवस्थाओं को वैदिक भाषा में ब्रह्मचर्यश्रम (छात्र जीवन) गृहस्थाश्रम आजीविका (केरिया) वानप्रस्थाश्रम सेवानिवृत्ति या वृत्ति से अवकाश काल तथा संन्याश्रम पूर्व निस्पृह अवस्था-वृद्धाश्रम कहते हैं कि वृद्धावस्था सौभाग्यशालियों को ही प्राप्त होता है। वृद्धावस्था का अभिप्राय नहीं अपितु प्रभु का वरदान है। यह ऐसा अतिथि जो एक बार आने पर दुबारा कभी जाता नहीं। ०-२५ ब्रह्मचर्य, २६-५० तक गृहस्थाश्रम, ६१ से ७५ तक वानप्रस्थाश्रम तथा ७५ से १०० वर्ष तक सन्यासाश्रम वृद्धों की सेवा, रक्षा, भोजन वस्त्रादि की व्यवस्था करना सन्तानों का परम कर्त्तव्य है। उन्हें वृद्धाश्रमों या ओल्ड हाऊस में भेजकर पाप की ओर कदम नहीं बढ़ाना चाहिए। दीर्घ और निरोगी सम्पन्न जीवन भी एक ऐश्वर्य है।

(७) नीति आधारित - मनोवृत्ति रूप ऐश्वर्य - समाज में सुर-असुर, देवता-राक्षस, सज्जन और दुष्ट आदि स्वभाग मनोवृत्ति के लोग निवास करते हैं। कहा गया है कि विद्वानों तथा धनाढ्यों से मित्रता, दीन-दुःखियों रूग्ण आदि के साथ करुणा बराबर आपके लोगों से प्रसन्नता, मुद्रिता सहित मैत्री और मधुरता पूर्ण व्यवहार को, समाज को हानि पहुंचाने वाले दुष्टों से न तो मित्रता और न शत्रुता रखें। उनके निकट न जाये तथ उन्हें अपनी निकट भी न आने दें अर्थात् उपेक्षा - वृत्ति रखें। यह समाज में व्यावहारिक जीवन की एक कसौटी है। इससे न तो आरक्षण के विषैले की राज हैं और सामाजिक विखंडन के नुकीले कांटे।

(८) पूर्ण आर्य का ऐश्वर्य - परमात्मा की कृपा से पूर्ण आय प्राप्त होती है। भगवान आयु के १२६वें वर्ष पूर्ण प्राप्त कर ही मृत्यु को प्राप्मत हुआ। वे लोग धन्य है जिनका बल और कौमार्य आयु काल धार्मिक तथा माता-पिता के उपदेशों में व्यतीत हुआ। यौवनावस्था न तो उसी असीमति इन्द्रिय भोग के लिए और न क्षणिक वैराग्य से घर छोड़ भागता है। खूब उन्नति करते हुए सफल गृहस्थ ही मोक्ष के अधिकारी होते हैं। ऐसे लोग ही जराअवस्था अर्थात् वृद्धावस्था में शेष जीवन भगवान की भक्ति में व्यतीत करते हुए अपने आगामी जीवन की तैयारी करते हैं। इसीलिए आयु के चारों भागों को ऐश्वर्य कहा गया है।

(९) अन्तःकरण चतुष्टय का ऐश्वर्य - शरीर के आन्तरिक भाग में परमात्मा ने अन्तःकरण अर्थात् अन्दर के कारण (साधन) प्रदान किये हैं। मन अद्भुत मंत्र है। इन्द्रियां इसी मन के सहयोग से अपनी इच्छापूर्ति करती है। परन्तु मन पर बुद्धि का नियंत्रण होना अत्यावश्यक है, अन्यथा शरीर रुपी वाहन खड्ड में गिर जायेगा। परमात्मा से प्रज्ञा-ऋत्म्भरा (बुद्धि की चरम अवस्था) का ऐश्वर्य की याचना करना चाहिए।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदाना नगर, इन्दौर ४५२००९ म.प्र.

वेद का आशय यही है कि परमात्मा से गुण ही मांगे जायें। अपने समस्त दुर्गुणों को दूर करने का उपाय भी किया जाय।

विचारणीय "मंदिर-मस्जिदों का देश"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

पढ़ा था। भारत गांवों में बसता है। भारत गांवों का देश है लेकिन मैं कहता हूँ भारत मंदिरों-मस्जिदों का देश है। देश में कितने गांव होंगे। कितने शहर होंगे। उससे कई गुना तो मंदिर-मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे हैं। मान लीजिये एक गांव में १०० घर है। तो प्रत्येक घर में तो देवी-देवता बिराजे ही हैं साथ में १०० घरों में ५० हिन्दू है तो ४ मंदिर है ४ मस्जिद है १-१ चर्च, गुरुद्वारा तो निश्चित ही है। फिर गांव के बाहर या प्रवेश द्वार पर ग्राम देवी-देवता का मंदिर जरुर होता है। सर्वसम्मति से बना एक विशाल मंदिर जब भी कोई बड़ी घोषणा होती है तो साथ में एक मंदिर-मस्जिद की भी हो जाती है। अगर मंदिर बनेंगे तो निश्चित ही है कि दूसरे धर्म में लोग शांत थोड़े ही बैठेंगे ये भी एक मस्जिद बनाने का बीड़ा उठायेंगे। इसके लिए चाहे चन्दा करना पड़े। भूखा रहना पड़े इसलिए मैं कहता हूं कि भारत तो मंदिर-मस्जिदों में बसता है। स्कूल भले ही न हो लेकिन मंदिर होना जरुरी है। आपके बच्चे भले ही अशिक्षित रहे किन्तु उनका हिन्दु-मुसलमान होना जरुरी है। ठीक भी है मंदिर-मस्जिद बनने से तुरन्त रोजगार भी उपलब्ध होने लगता है। पूजन-पाठ की सामग्रियों की दुकानें। साईकिल, गाड़ी स्टैण्ड,। धूप-दीप अगरबत्ती की दुकानें खुलकर रोजगार मुहैया तत्काल हो जाते हैं। स्कूलों का क्या है ? खाली पढ़कर लिखकर बेरोजगार घूमने से बेहतर है कि व्यक्ति चार पैसे कमाये। जूते-चप्पल चुराने के लिए चोर है ही उन्हें भी रोजगार मिल जाता है। फिर चुनाव के समय मंदिर मस्जिद कितने बड़े वोट बैंक का काम करते है। सरकार बनाने पलटाने के लिए मंदिर-मस्जिद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मंदिर समर्थक पार्टियां कहती है चुनाव में जिता दो मंदिर बनायेंगे। भव्य और आलीशान। मस्जिद समर्थक पार्टियां कहती है दिल्ली पहुंचा दो। मस्जिद बचायेंगे और भी बनायेंगे भी।

देश की राजनीति इन्हीं मंदिर-मस्जिदों से शुरु होकर इन्हीं पर खत्म होती है। जो जितना बड़ा दानकर्ता वह उतना ही बड़ा धर्मात्मा। जिन धनवानों को अपना यशोगान करवाना होता है वे मंदिर मस्जिद को भारी दान देकर दानकर्त्ताओं की लिस्ट में अपना नाम लिखवाकर जयकार करवाते हैं। आपकी सुबह आपकी शाम मंदिर-मस्जिद से शुरु होती है खत्म होती है। मंदिर है तो महन्त जी का आश्रम भी होगा फिर चेले-चेलियां भी होंगे। मस्जिद हैं तो मौलवी भी होंगे। फिर धार्मिक कट्टरता भी पैदा कर ही दी जायेगी। फिर दंगे-फसाद, मारकाट, हिंसा के वक्त आप अपनी व्यक्तिगत दुश्मनी भी निकाल सकते हैं। झगड़े में पुलिस कोर्ट कचहरी की झंझटे रहती है लेकिन मंदिर-मस्जिद के फसाद में आप शहर के शहर जला देते हैं। सामूहिक हत्यायें करें आपका कुछ नहीं बिगड़ने वाला। उस समय तो आप धार्मिक नेता है। धर्म के ठेकेदार हैं। इसी के चलते अब शहरों की ये हालत हो गई है कि हर गली, हर दोराहे, तिराहें, चौराहे पर एक मंदिर का एक मस्जिद का होना अनिवार्य हो गया है। हो क्या गया है हैं ही। हर मुहल्ले हर कालोनी में दो-चार मंदिर-मस्जिद बने ही है जहां नहीं बने वहां निर्माण कार्य चालू है। चंदा वसूलने के नाम पर कितने लोग रोजगार से लगते हैं। कितने गुंडे, कितने पंडे, कितने झंडे होते हैं। प्रिटिंग से लेकर प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया इन्हीं खबरों से टी.आर.पी. ले रहे हैं। पंडित, मौलवी, धर्म-जाति के चौधरी, राजनेता से लेकर गुंडे तक धर्मात्मा से लेकर पापात्मा तक सभी मंदिर-मस्जिद के खेल में अपनी रोटियां सेंक रहे हैं।

ऐसे विद्यालय, महाविद्यालय शिक्षा जैसी संस्थायें कहां महत्व रखती है। जब सब कुछ रोटी-कपड़ा मकान है तो मंदिर-मस्जिद ज्यादा महत्वपूर्ण है। उस शहर, उस गांव का पता तो जहां मंदिर न हो मस्जिद न हो। शांति सभ्यता-विकास, मनुष्यता जैसी बातें किताबी और बेवकूफाना है। जो सच है वो यही है कि धर्म के झंडे गाड़ो और दूसरे के खून से अपनी तिजोरी भरो। सो हमारे देश में मंदिर बना है, बन रहा है और बनेगा। चंदा उगाही जारी है। हमारा मंदिर-मस्जिदों का देश है। हमारे देश के लोग धार्मिक जाति अति धार्मिक लोग और हमारे अल्लाह, भगवान, भक्तवत्सल। मंदिर-मस्जिद बनते ही रोटी का जुगाड़।

पता - पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

पर्व विशेष

प्रेमप्रसार का पवित्र पर्व : होली

श्रीमती किरण खोसला

मनुष्य स्वभाव से ही उत्सव-प्रिय प्राणी है। **"उत्सव प्रियाः मानवाः"** यह महाकवि कालिदास ने भी कहा है। वह अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आनन्द एवं सुख में बिताना चाहता है। त्यौहार मानव के इसी हर्षोल्लास की भावना के परिचायक हैं। त्यौहारों से मानव जीवन की उदासी और निराशा दूर हो जाती है और मन में एक नया उत्साह व नयी उमंग भर जाती है। हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में होली रंग और उमंग का अनुपम पर्व है। यह उत्सव शीतकाल की समाप्ति और बसन्त के आगमन पर फाल्गुन मास की पूर्णिमा को उल्लास और उत्साह से मनाया जाता है। होलिकोत्सव का प्रारंभ यद्यपि अष्टमी से हो जाता है, तो भी दो दिन इसके विशेष होते हैं। पूर्णिमा को होलिका दहन होता है और दूसरे दिन-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को रंग (फाग) खेला जाता है।

यह उत्सव क्यों मनाया जाता है ? इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं, पर मुख्य मत यह है कि यह ऋतु पर्व है। भारत में बसन्त एक बहुत सुहानी ऋतु होती है। जो प्रकृति में विकास और उमंग का एक भाव भर देती है। इन दिनों लता-पादपों पर नई-नई कोंपलें आ जाती है। वनों-उपवनों में रंग-बिरंगें फूल उद्वेलित करने लगते हैं। सरसों के फूलों की पीली साड़ी पहने धरती भी मन को हरती है। जिसमें लोगों मनों में एक नई उमंग और नये जीवन का आनन्द छा जाता है। होली के आगमन से समाज के ऊँच-नीच का भाव एक दूसरे के बीच मिलने के लिए लालायित हो उठते हैं। होली का रंग सभी के हृदयों से मनोमालिन्य को दूर कर देता है। इसे सभी एक होकर बड़े चाव से मनाते हैं।

होली का दूसरा दिन **"दुलैंडी"** कहलाता है। इस दिन खूब राग-रंग होता है। बालक, युवक, वृद्ध और नारियां प्रातः ही रंग की पिचकारियां और गुलाल लिए निकल पड़ते हैं और सब प्रकार का भेद-भाव भूलकर एक दूसरे पर रंग डालकर और गुलाल लगाकर हर्ष प्रकट करते हैं। इस अवसर पर ऊँच नीच की, स्त्री-पुरुष की छोटे-बड़े की समस्त वर्जनाएं त्याग दी जाती है। रंग खेलते हुए लोग परस्पर गले मिलते हैं तथा स्नेह सम्बन्ध की मिठाईयाँ बंटती है। प्रीति-भोज होते हैं। इस दिन शत्रु भी अपनी शत्रुता भुलाकर आपस में एक दूसरे के गले लग जाते हैं। जीवन में एक बार फिर नई आशाएँ, नई उमंगें छा जाती है। इस अवसर पर बजने वाले ढोलक, करताल, झांझ और मंजीरों की मधुर-मंद्र ध्वनि उन्हीं उमंगों को प्रकट करती हैं। होली की इस उमंग ने भक्तों के हृदय को भी तरंगित किया। तभी तो मीराबाई ने कहा है-

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे
सील सन्तोष की केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर बरसत रंग अपार रे ॥

कुछ लोग इस शुभ दिन, गांजा, भांग, सुलफा तथा शराब पीते हैं, परन्तु यह न तो शुभ है और न हर्ष मनाने का उचित ढंग ही। इस पर्व में तो वासन्ती नवसस्येष्टि एवं पारस्परिक स्नेह सद्भावयुक्त मेलन होता है। होली भारतीय संस्कृति का एक पवित्र त्यौहार है। अतः हमें इस दिन को एक पवित्र, मंगलमय और आनन्दमय त्यौहार के रुप में ही मनाना चाहिए।

पता : स्मृति नगर, भिलाई (छ.ग.)

भावाभिव्यक्ति

'अग्निदूत' जो नाम ज्ञान,
गुण, गरिमा वैसी पाई।
'अग्निदूत' ने आर्यों में वेदों
की ज्योति जलाई ॥
अग्नि-वायु-आदित्य-अंगिरा,
दयानन्द की आभा।
पत्रिका ने जन-जन में
वैदिक संस्कृति पनपाई ॥

- **प्रभाकर भारद्वाज,** आदर्श कालोनी, गुना (म.प्र.)

विश्लेषणात्मक शरीर और उपकरण

• अजय शर्मा

आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे। खिडकी का कॉच एक चौथाई खुला था उसमे से हल्की ठंडी हवा भीतर प्रवेश कर रही थी। वातावरण शांत था, बीच बीच में सिसकियों की आवाजें सुनाई पड जाती थी। मैं अपने मित्रों भूपिंदर सिंह, आशुतोष सिन्हा, राजेन्द्र यादव के साथ अंबिकापुर जा रहा था। वाहन स्कार्पियो को निर्मल साहू चला रहा था, हम सब मित्र आशुतोष सिन्हा को अंबिकापुर छोडने जा रहे थे। उसने करीब एक घटा पूर्व ही अपनी माताजी को खोया था। शाम को पॉच बजे फोन पर उसने अपनी माताजी से बात की थी। माताजी की तबीयत कुछ समय से खराब चल रही थी उनके रक्त में शर्करा की मात्रा तेजी से घट रही थी। डॉ. साहब ने आज फिर रक्त परीक्षण करवाने के लिए कहा था, उसकी रिपोर्ट का इतजार था। तभी छः सवा छः बजे के करीब आशुतोष के फोन पर यह दुखद खबर आई। शांत वातावरण मे आ रही सिसकियों की आवाज आशुतोष की सिसकियॉ ही थी। जब सिसकियॉ बढने लगती तब भूपिंदर सिंह की आवाज सुनाई पडती, हौसला रख भाई हौसला रख। चाचीजी की मृत्यु का जो कारण बताया जा रहा था, वह रूधिर में शर्करा की मात्रा का कम हो जाना था। मेरे ससुरजी को भी शर्करा का रोग है। वे तो घर पर ही रक्त परीक्षण यंत्र रखते हैं जहॉ बेचैनी महसूस हुई तुरंत रक्त परीक्षण कर लिया और आवश्यकतानुसार उपचार कर लेते हैं। यह जागरूकता ही है जो हमारे सिर पर उनका साया सलामत है।

विगत माह एक दुखद समाचार सुनने को मिला । कल्याण कालेज भिलाई नगर के रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ. विशेष मोहबे का निधन हो गया था, कारण बताया गया हृदयाघात। हृदय गति थम जाने से उनकी मृत्यु हो गई थी। स्व. डॉ. विशेष मोहबे के व्यक्तित्व ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने मुझे स्नातक स्तर की कक्षाओ में भौतिकशास्त्र पढाया था।

खलील अहमद कुरैशी, मेरे पिताजी के साथ भिलाई इस्पात संयत्र के एक ही आफिस मे कार्य करने के बाद सेवानिवृत हो चुके थे। वे अक्सर हमारे घर आया करते थे। हम सब भाई बहन उन्हें खान चाचा कहकर संबोधित करते है। एक दिन खान चाचा के ज्येष्ठ सुपुत्र हमारे घर आए और बाहर से ही पूछने लगे अंकल हैं क्या ? मुझे शक हुआ ये बाहर से ही क्यों पूछ रहा है भीतर आता क्यों नहीं । मैने पूछा क्या काम है ? वे तो बाजार की ओर ही टहलने निकले हैं। बालक ने कहा अंकल जब घर लौटे तो हमारे घर पर भेज दीजिएगा पापाजी नही रहे। मैने एक साथ कई सवाल कर डाले, क्या ? कब हुआ? कैसे हुआ ? वह कहने लगा आज दोपहर के वक्त पापाजी कहने लगे कि "मुझे अच्छा नहीं लग रहा है" तो हम लोग उन्हें जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र सेक्टर ९ ले गए । वहॉ उनका ब्लड प्रेशर बहुत कम हो गया, लो ब्लड प्रेशर बढ नहीं पाया और इसी वजह से उनकी मृत्यु हो गई। मैने कई लोगो को यह कहते सुना है कि हाई ब्लड प्रेशर से लो ब्लड प्रेशर ज्यादा खतरनाक है क्योकि हाई ब्लड प्रेशर को दवा देकर नियंत्रित (कम) किया जा सकता है किंतु लो ब्लड प्रेशर को बढाना मुश्किल होता है।

मैं खिडकी के कॉच से बाहर देख रहा था और ये पुरानी बातें मेरी नजरों के सामने किसी चलचित्र की तरह चल रही थी। इस चलचित्र ने मेरे सम्मुख कुछ प्रश्न खडे किए, मृत्यु क्या है ? शरीर और आत्मा का क्या संबंध है ? शरीर किस तरह कार्य करता है ? घंटे भर पूर्व घटित चाचीजी की मृत्यु ने यह बोध कराया कि जीवित शरीर के कुछ मानक तय है, जब तक ये मानक सलामत रहते हैं शरीर स्वस्थ रहता है। जैसे ही इन मानकों में हेरफेर होने लगे तो शरीर की स्वस्थता डगमगाने लगती है। यह सामान्य अनुभव की बात है यदि कोई व्यक्ति उल्टी दस्त से पीडित हो, गर्मी में डिहाईड्रेशन का शिकार हो जाए तो उसके शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है। उस व्यक्ति को चक्कर आने लगते है, वह खडा भी नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्ति को तुरंत ग्लूकोस चढाया जाता है जिससे शरीर में जल की मात्रा अनुकूल स्तर तक आ जाए। जब पीडित व्यक्ति के शरीर मे जल की मात्रा अनुकूल स्तर तक आ जाती है तो व्यक्ति चंगा हो जाता है। इन मानकों मे अत्यधिक परिवर्तन मृत्यु का कारण बन जाता है।

सजीव की मृत्यु स्वाभाविक होती है और कभी अस्वाभाविक भी। जो अस्वाभाविक मृत्यु होती है उदाहरणस्वरूप हत्या, आत्महत्या या कोई दुर्घटनाजनित मृत्यु । इन सभी प्रकार की मृत्यु में जीवन के लक्षणों में से किसी एक को बलपूर्वक समाप्त किया जाता है। अक्सर सुनने में आता है फला व्यक्ति ने फासी के फंदे पर झूलकर जीवन लीला समाप्त कर ली । जीवित शरीर मे श्वास की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से चलती है किंतु गले पर फंदा कसने पर श्वास नलिका दबती है जिससे वायु का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है। फेफडों को आवश्यक आक्सीजन न मिलने के कारण दम घुटने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। श्वास लेने पर वायुमंडलीय हवा शरीर के भीतर जाती

है। इस वायु में उपस्थित आक्सीजन को रक्त द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। रक्त प्रवाह के साथ यह आक्सीजन शरीर के विभिन्न भागों तक जाती है। सजीव द्वारा खाए गए भोजन का आक्सीकरण इसी आक्सीजन द्वारा होता है। भोजन के आक्सीकरण की प्रक्रिया पाचन कहलाती है। यह रासायनिक अभिक्रिया ऊर्जा उत्पन्न करती है, जिससे शक्ति पाकर शरीर सक्रिय रहता है। जब शरीर में आक्सीजन की आपूर्ति रोक दी जाती है तो भोजन पाचन के लिए आवश्यक आक्सीजन की आपूर्ति बाधित होती है और ऊर्जा उत्पादन में रूकावट आने पर शरीर को कार्य करने हेतु आवश्यक ऊर्जा की आपूर्ति नहीं होती है परिणामस्वरूप शरीर रूपी मशीन कार्य करना बंद कर देती है।

इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए और उसके शरीर से रक्त का बाहर की ओर प्रवाह होने लगे। यदि रक्त के प्रवाह को रोका नहीं जाए तो शरीर में रक्त की मात्रा घटने लगती है और अत्यधिक रक्त प्रवाह से सजीव की मृत्यु हो जाती है। जीवित रहने के लिए शरीर मे जितना रक्त होना चाहिए उससे कम रक्त होने पर सजीव की मृत्यु हो जाती है। यद्यपि हमारे शरीर में ऐसी व्यवस्था है कि यदि शरीर में रक्त की मात्रा कम हो तो शरीर में ही रक्त का निर्माण हो जाता है। जब कोई व्यक्ति रक्तदान करता है तो शरीर में हुई रक्त की कमी शरीर मे रक्त के निर्माण से स्वतः ही दूर कर ली जाती है।

एक चिकित्सक जब किसी रोगी का उपचार करता है तो वह विभिन्न तरह के परीक्षण कर रोग का कारण जानने का प्रयास करता है। वह जांचता है कि शरीर का कौन सा घटक अपने मानक परास से विचलित हुआ है। घटक की मात्रा में परिवर्तन का पता चलते ही चिकित्सक उस घटक को उसके मानक परास में लाने का उपाय करता है। घटक के वांछित परास में आने पर रोगी स्वस्थ हो जाता है। किसी चिकित्सक की दृष्टि मे रोगी सिर्फ एक बीमार शरीर होता है। आज चिकित्सा विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि रोगी के बीमार या क्षतिग्रस्त अंग की जगह किसी दूसरे शरीर से निकाले हुए अंग या फिर कृत्रिम अंग प्रत्यारोपित कर दिए जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् उस शरीर से अंगो को निकालकर किसी दूसरे शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है, मृत शरीर से निकाला गया अंग दूसरे जीवित शरीर में कार्य करने लगता है। जेनेटिक इंजीनियरिंग में तो स्टेम सेल से अंगो को विकसित कर आवश्यकतानुसार रोगी शरीर में प्रत्यारोपित किया जा रहा है। यह ठीक उसी तरह से हो रहा है जैसे कोई मैकेनिक या मिस्त्री बिगडे उपकरण के त्रुटिपूर्ण अवयव को दूसरे अवयव से प्रतिस्थापित कर उपकरण को दुरूस्त करता है। हमारे यहाँ अध्यात्म में यह कल्पना बहुत पहले ही हो गई है, भगवान गणपति इसके उदाहरण हैं।

सजीव शरीर एवं किसी विद्युत उपकरण की क्रियाविधि पर गौर करें तो दोनो में काफी समानताएँ देखी जा सकती है। यह मान्यता है कि सजीव शरीर में आत्मा का निवास होता है। सजीव शरीर का संचालन आत्मा के द्वारा होता है। एक विद्युत उपकरण का संचालन उसमे प्रवाहित होने वाली विद्युत धारा के द्वारा होता है। आत्मा की अनुपस्थिति में शरीर मिट्टी तुल्य होता है, इसी तरह विद्युत धारा की अनुपस्थिति में विद्युत उपकरण बेकार हो जाता है। आत्मा की उपस्थिति मे ही जीवित शरीर की विभिन्न क्रियाएँ होती है। आत्मा की अनुपस्थिति में शरीर विभिन्न जैविक क्रियाएँ कर पाने मे असमर्थ होता है। विद्युत उपकरण में जब विद्युत धारा प्रवाहित होती है तभी वह प्रतिक्रिया देता है और अपेक्षित कार्य करता है। विद्युत धारा की अनुपस्थिति में विद्युत उपकरण कोई प्रतिक्रिया प्रदर्शित नहीं करता। उससे कोई अपेक्षित कार्य नही होता।

आत्मा को अपने गुणों के प्रदर्शन हेतु सजीव शरीर में विभिन्न संसाधनो की आवश्यकता पड़ती है। सजीव नेत्रों का उपयोग कर देखता है, कर्ण का उपयोग कर सुनता है, त्वचा का उपयोग कर स्पर्श करता है, ह्रदय का उपयोग कर रक्त संचार करता है, फेफडों का उपयोग कर श्वसन करता है, मस्तिष्क का उपयोग कर सोचता है, विचारता है, तर्क और विश्लेषण करता है तथा निर्णय करता है इस तरह शरीर के विभिन्न अंगो के द्वारा भिन्न–भिन्न उत्तरदायित्व निभाए जाते है। बिना उपर्युक्त संसाधनो के आत्मा के द्वारा ये विभिन्न गुण प्रदर्शित नहीं किए जाते। आत्मा की उपस्थिति में ही ये सारे अंग क्रियाशील होते हैं। किसी विद्युत उपकरण में विद्युत धारा को अपना प्रभाव प्रदर्शित करने के लिए भी विभिन्न संसाधनो की आवश्यकता होती है। अपने घर के टेलीविजन को ही लीजिए। विद्युत धारा प्रवाहित होने पर स्पीकर से ध्वनि उत्पन्न होती है, विद्युत धारा प्रवाहित होने पर एल.सी.डी. या एल.ई.डी. स्क्रीन रंगीन प्रकाश उत्पन्न करता है, विद्युत धारा प्रवाहित होने पर ही रिमोट से विद्युत चुंबकीय तरंगे उत्पन्न होती है। विद्युत धारा प्रवाहित होने पर ही बल्ब का फिलामेंट प्रकाश उत्पन्न करता है, धारा प्रवाहित होने पर ही ईस्त्री, ऊष्मक, ओवन जैसे उपकरणों में ऊष्मा उत्पन्न होती है। ये सारे प्रभाव विद्युत के ही प्रभाव है जो विभिन्न उपकरणो के जरिए विद्युत धारा की उपस्थिति मे ही प्रदर्शित होते हैं।

किसी शरीर मे आत्मा उपस्थित हो किंतु शरीर का कोई अंग विशेष विकसित ही न हुआ हो या फिर कार्य कर पाने मे अक्षम हो तो आत्मा अपने गुण प्रदर्शित नहीं कर पाती। उदाहरण स्वरूप आत्मावान जीवित शरीर मे यदि नेत्रों का पूर्ण विकास न हुआ हो या नेत्रों की बनावट ही त्रुटिपूर्ण हो तो वह सजीव देख पाने मे असमर्थ होता है। यदि किसी शरीर मे सुनने हेतु सहायक संसाधन कर्ण का विकास न हुआ हो या फिर विकसित कानों में सुनने की क्षमता ही न हो तो वह सजीव

आवाज सुन पाने मे असमर्थ होता है। ऐसा पाया गया है कि विद्युत उपकरण का कोई भाग खराब हो तो विद्युत धारा प्रवाहित करने पर उपकरण के उस भाग के द्वारा क्रियाशीलता प्रदर्शित नहीं होती, जबकि उपकरण के अन्य भाग प्रतिक्रिया देते रहते है। टेलीविजन के स्पीकर में खराबी होने पर चित्र तो दिखाई देता है किंतु आवाज सुनाई नहीं पडती, इसी तरह पिक्चर ट्यूब खराब होने पर आवाज तो सुनाई देती है किंतु चित्र दिखाई नही पडते हैं।

किसी शरीर मे आत्मा अनुपस्थित हो और शरीर के विभिन्न अंग ठीकठाक हो, सारे अंग कार्य करने मे सक्षम हो तो भी वे अपेक्षित कार्य नहीं कर पाते हैं। विद्युत धारा की अनुपस्थिति में किसी उपकरण के विभिन्न सक्षम अवयव प्रतिक्रिया करने मे असमर्थ होते है। शरीर मे आत्मा उपस्थित हो किंतु शरीर के अंग त्रुटिपूर्ण हो या तो उनकी रचना सही न हो या फिर उनका पूर्ण विकास न हुआ हो तो आत्मा की उपस्थिति मे भी ये अंग क्रिया कर पाने में असमर्थ होते हैं। किसी विद्युत उपकरण का कोई अवयव त्रुटिपूर्ण हो तो विद्युत धारा की उपस्थिति मे भी उपकरण अपेक्षित परिणाम प्रदर्शित नहीं करता है।

आत्मा शरीर में उपस्थित अवयव मस्तिष्क का उपयोग कर सोच विचार, तर्क, विश्लेषण निष्कर्ष इत्यादि को अंजाम देती है। किंतु विभिन्न शरीरों मे एक ही आत्मा की उपस्थिति में मस्तिष्क द्वारा प्रदर्शित होने वाली क्षमताएँ भिन्न – भिन्न परिमाण में प्रदर्शित होती हैं। एक ही आत्मा विभिन्न सजीव शरीरों में उपस्थित रहकर भिन्न – भिन्न लक्षण भिन्न – भिन्न परिमाण में प्रदर्शित करती है। डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत अनुसार आज का मनुष्य विकास के विभिन्न चरणों से होता हुआ वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुआ है। मनुष्य से पहले की स्थिति वानर की स्थिति है। कहा भी जाता है कि मनुष्य के पूर्वज वानर थे। बंदर और मनुष्य के शरीर की रचना मे काफी समानता है, इनके अंग लगभग समान ही हैं, विकास के क्रम में अनुपयोगिता की वजह से मानव शरीर मे पूछ अनुपस्थित है। मनुष्य एव वानर के डी. एन.ए. में भी बहुत अधिक समानता पाई गई है। विभिन्न योनियों में एकसमान आत्मा के सिद्धांतानुसार मानव व वानर के शरीर मे एक ही आत्मा विद्यमान है। वानर के शरीर मे भी मस्तिष्क उपस्थित होता है, एकसमान आत्मा मानव तथा वानर के शरीर मे रहकर भिन्न – भिन्न परिमाण में गुणो का प्रदर्शन करती है। वानर के शरीर में उपस्थित आत्मा के द्वारा मनुष्य के शरीर में उपस्थित आत्मा की तरह सोच विचार, तर्क, विश्लेषण एवं निर्णय क्षमता का प्रदर्शन नहीं किया जाता। इसका कारण क्या है ? वानर के शरीर मे उपस्थित मस्तिष्क मानव मस्तिष्क की तुलना मे कम विकसित होता है क्या इसलिए दोनों शरीरों में एकसमान आत्मा उपस्थित होने के बावजूद भी दोनों शरीरों में आत्मा के गुण भिन्न – भिन्न परिमाण में प्रदर्शित होते हैं ? एक समान आत्मा की उपस्थिति में विभिन्न सजीवों में से मनुष्य के द्वारा ही सर्वाधिक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित होती है क्योंकि मनुष्य का मस्तिष्क ही सर्वाधिक विकसित होता है। इसमें कोई शक नही कि मस्तिष्क को कार्य करने की क्षमता आत्मा द्वारा ही प्रदान की जाती है किंतु यह भी सत्य है कि मस्तिष्क की क्षमताओं की सीमा मे ही आत्मा के गुण प्रदर्शित होते हैं।

विभिन्न सजीव शरीरों मे आत्मा के द्वारा प्रदर्शित होने वाले गुण उस शरीर में उपलब्ध संसाधनो की उपस्थिति, क्षमता, गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं। सभी मनुष्यों के मस्तिष्क की संरचना समान होती है और सभी मनुष्यों के शरीर में उपस्थित आत्मा भी एक ही होती है, बावजूद इसके अलग अलग मनुष्यों की बुद्धिमत्ता अलग अलग परिलक्षित होती है। एक ही आत्मा के सभी सजीव प्राणियों में विराजमान होने पर भी उन प्राणियों के द्वारा अलग अलग गुण प्रदर्शित किए जाते हैं। एक ही आत्मा अलग अलग शरीरों में रहकर अलग अलग गुण प्रदर्शित करती है। अलग अलग विद्युत बल्ब मे समान परिमाण की विद्युत धारा प्रवाहित करने पर अलग अलग तीव्रता का प्रकाश उत्पन्न होता है। उत्पन्न प्रकाश की तीव्रता बल्ब की शक्ति पर निर्भर करती है । 0 वाट, 60 वाट या 100 वाट के बल्ब में से समान धारा प्रवाहित करने पर 100 वाट का बल्ब ही सर्वाधिक तीव्रता का प्रकाश उत्पन्न करता है। उत्पन्न प्रकाश की तीव्रता बल्ब की क्षमता पर निर्भर करती है। एकसमान विद्युत धारा अलग अलग बल्बों में प्रवाहित होने पर अलग अलग तीव्रता का प्रकाश उत्पन्न करती है। ठीक उसी तरह एक ही डी.वी.डी. का गाना भिन्न – भिन्न शक्ति वाले डी.वी.डी. प्लेयर में बजाया जाए तो उत्पन्न ध्वनि की गुणवत्ता भिन्न – भिन्न होती है। उत्पन्न ध्वनि की गुणवत्ता डी.वी.डी. प्लेयर की शक्ति पर निर्भर करती है। मनुष्य के शरीर में कुछ मानक तय हैं। स्वस्थ शरीर का तापमान लगभग 98° फाहरेनहाईट होता है। रक्तदाब 80 मि.मी. से 120 मि.मी. की सीमा में होता है । रक्त में शर्करा 70 मिलीग्राम प्रति डेसीलिटर से 150 मिलीग्राम प्रति डेसीलीटर होनी चाहिए। यदि उक्त घटक निश्चित परास से कम या ज्यादा होते हैं तो शरीर की कार्यक्षमता प्रभावित होती है और शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। यदि किसी घटक में परिवर्तन बहुत अधिक हो जाए जैसे शरीर का तापमान बहुत कम या फिर बहुत अधिक हो जाए, इसी प्रकार रक्तदाब बहुत कम या बहुत अधिक हो जाए, रक्त में शर्करा की मात्रा बहुत कम या बहुत अधिक हो जाए, तो यह सजीव की मृत्यु का कारण बनता है। विद्युत उपकरण मे विभिन्न अवयव होते है । किसी एक अवयव जिसकी क्षमता निश्चित है, इसके स्थान पर अगर भिन्न क्षमता का अवयव लगा दिया जाए तो उपकरण की क्रियाविधि प्रभावित होती है । विद्युत उपकरण में उसकी रेटिंग से भिन्न परिमाण की विद्युत धारा प्रवाहित की जाए तो उपकरण को नुकसान होता है। 220 वोल्ट विभव पर कार्य करने वाले उपकरण मे से

यदि 440 वोल्टता की विद्युत प्रवाहित की जाए तो वह उपकरण खराब हो जाता है। शरीर जब तक जीवित रहता है, जब तक शरीर में आत्मा रहती है, तब तक शरीर गर्म रहता है। जब शरीर में आत्मा नहीं रहती तो शरीर का तापमान भी कम हो जाता है, मृत शरीर ठंडा हो जाता है। विद्युत धारा की अनुपस्थिति में चालक ठंडा रहता है और जब किसी चालक मे विद्युत धारा प्रवाहित होती है तो चालक गर्म हो जाता है। यह विद्युत धारा का ऊष्मीय प्रभाव कहलाता है ।

सजीव शरीर के परितः एक तेज होता है जिसे आभा कहा जाता है। भिन्न – भिन्न सजीवों का आभामंडल भिन्न – भिन्न होता है। सजीव की मृत्यु के साथ ही यह आभामंडल भी समाप्त हो जाता है। जीवित शरीर में आत्मा की उपस्थिति मानी जाती है, मृत शरीर आत्माविहीन माना जाता है। अतः संभव है कि सजीव शरीर के परितः विद्यमान आभा का कारण शरीर मे उपस्थित आत्मा ही है। किसी चालक में धनात्मक या ऋणात्मक आवेश हो तो उसके समीप एक विद्युतीय क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है, यदि चालक में आवेश का प्रवाह हो तो चालक के परितः विद्युत एवं चुंबकीय दोनो क्षेत्र उत्पन्न हो जाते हैं। विद्युत एवं चुंबकीय क्षेत्रों की तीव्रता चालक में प्रवाहित धारा के परिमाण पर निर्भर करती है। अलग अलग परिमाण की धारा प्रवाहित होने पर किसी चालक के समीप अलग अलग तीव्रता का विद्युत एवं चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। इन क्षेत्रों का आस्तित्व तब तक ही रहता है जब तक चालक में विद्युत धारा प्रवाहित होती रहती है, धारा की अनुपस्थिति में चालक से संबद्ध विद्युत एवं चुंबकीय क्षेत्र भी समाप्त हो जाते हैं। चालक से संबद्ध विद्युत एवं चुंबकीय क्षेत्र का कारण उस चालक में प्रवाहित होने वाली विद्युत धारा होती है। मानव शरीर के नियंत्रण एवं संचालन में भी विद्युत धारा का उपयोग होता है। मानव शरीर की क्रिया मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित होती है। मस्तिष्क ही विभिन्न संवेदी अंगो से संदेश ग्रहण कर उनका विश्लेषण करता है, फिर निर्णय कर उन अंगो को आदेश देता है। मस्तिष्क और विभिन्न अंगो के बीच सूचनाओ तथा आदेशो के आदान प्रदान के लिए भी विद्युत धारा की आवश्यकता होती है। शरीर मे उत्पन्न विद्युत धारा से मस्तिष्क के न्यूरान संचालित होते है और विभिन्न रसायन उत्पन्न कर दूसरे न्यूरान से संवाद करते हैं। न्यूरानो के बीच संवाद की स्थिति मे एक न्यूरान का विद्युत विभव 15 मिलीवोल्ट से 30 मिलीवोल्ट तक बढता है। सजीव शरीर की रचना, कार्यविधि, रोग और उसका उपचार, इस आधार पर देखा जाए तो शरीर और उपकरण में काफी समानता नजर आती है किन्तु दोनों में एक महत्वपूर्ण अंतर भी है। सजीव शरीर कोशिकाओं से निर्मित होता है, कोशिकाओं में जीवन होता है। एक कोशिका विभाजित होकर नई कोशिका का निर्माण करती है। मानव शरीर के किसी अंग में एक ही कोशिका ताउम्र नहीं रहती, ज्यादातर अंगों मे प्रतिदिन कुछ कोशिकाओं की मृत्यु होती है और कुछ कोशिकाओ का निर्माण भी होता है। एक सजीव शरीर के अंग पूरे जीवन काल में कई बार बदल जाते हैं ह्रदय और मस्तिष्क इसके अपवाद है। एक उपकरण अणुओं से मिलकर बना होता है, उपकरण को बनाने वाले अणुओं में पुनर्उत्पादन का यह गुण नहीं पाया जाता है। सजीव शरीर अपने समान अन्य शरीर को जन्म देता है किन्तु एक उपकरण अपने समान उपकरण को जन्म देने मे असमर्थ होता है। *पता डी.ए.वी पब्लिक स्कूल एस.ई.सी.एल. छाल जिला – रायगढ*

ईश्वर प्रार्थना की आवश्यकता

प्रश्न हो सकता है कि जब परमात्मा हमारे कर्मों का ही फल देगा तो क्या आवश्यकता है प्रभु से प्रार्थना करने की ? इस प्रश्न का बहुत सुन्दर उत्तर महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार दिया है कि इससे निरभिमानता आती है। मानव अपने से अधिक से अधिक श्रेष्ठ किसी सत्ता को स्वीकार करता है तो अभिमान और अहंकार से दूर हो जाता है। परमात्मा की निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार अपने जीवन को शान्ति और आनन्द प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। नित्य प्रतिदिनि प्रार्थना और उपासना करने का विधान इसलिए है कि हमें प्रतिदिन ही सांसारिक कार्य कलापों में अपना समय लगाना होता है। अतः इससे दूर रहना आवश्यक है। जिस प्रकार शरीर और वस्त्रों का मैल अनायास ही बार बार लगता रहता है। शरीर की स्वच्छता के लिए नित्य स्नान करते हैं। वैसे ही जीवात्मा प्रकृति के सम्बन्ध से सदैव अज्ञानता और पाप के मैल को प्राप्त करता है। अतः बुद्धिमान पुरुष इस प्रकृति से उत्पन्न हुए मैल को दूर करने के लिए परमात्मा की उपासना बार-बार करता है। इसे अपने जीवन की दिनचर्या का अंग बना लेता है। संसार में देखते हैं कि किसी व्यक्ति के छोटे से किये उपकार के प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। फिर परमात्मा ने तो इस समस्त सृष्टि को ही हमारे लिए प्रदान किया है। उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में कृपणता नहीं होनी चाहिए।

गवेषणात्मक वैदिक राजनीति के मूल तत्व

- स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

राजनीति मानव की अनिवार्य आवश्यकता है। यद्यपि आदि सृष्टि में कुछ काल तक मानव बिना राजनीति के ही रहता रहा, किन्तु सर्वदा उसी प्रकार नहीं रह सकता था। इसका कारण यह है कि मानव में विचार शक्ति है और विचार शक्ति का मानव सदैव सदुपयोग ही करेगा तथा प्रत्येक व्यक्ति ही सदुपयोग करेगा-न्यूनातिन्यून यह तो नहीं कहा जा सकता।

विचार शक्ति का सभी के द्वारा सदैव ही सदुपयोग सम्भव नहीं, इसका भी एक कारण है और वह कारण यह है कि यह संसार लुभावना है। मनुष्य इसकी चमक-दमक से प्रभावित हो जाता है और बहककर अनुचित कार्य कर बैठता है। ऐसे अनुचित कार्य-जिनसे दूसरे व्यक्तियों के अधिकारों का हनन होता है तथा मानव समाज में बुराईयों को प्रोत्साहन मिलता है, इस प्रकार की गतिविधियों की रोकथाम तथा निराकरण के लिये दण्ड-व्यवस्था का होना अनिवार्य है और दण्ड-व्यवस्था के संचालन के लिये शासन-सत्ता की अनिवार्य आवश्यकता है।

वेद है ईश्वरीय ज्ञान - उसमें राजनीति न हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है ? आधुनिक युग-प्रवर्तक वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद अनुसंधान के परिणामस्वरुप घोषणा की है - वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। जो मानव समाज की अनिवार्य आवश्यकता है, उसके सत्य होने में क्या सन्देह हो सकता है ? जब राजनीति सत्य विद्याओं में से एक है तो उसे वेद में होना ही चाहिये, यह आकांक्षा वेद-भक्त के हृदय में जागृत हुए बिना नहीं रह सकती। यदि जिज्ञासु जनों की आकांक्षा की पूर्ति में मेरी ये परिक्तयाँ सहयोगी हो सकें, तो अहोभाग्य। वेद का एक मन्त्र है -

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तल्लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

(यजु. अ। २०, मन्त्र २५)

अर्थात् जहां ब्रह्म-अध्यात्म और क्षत्र - राजनीति साथ-साथ रहते तथा जिस देश के विद्वान् तेजपूर्वक रहते हैं, वहीं देश पुण्यलोक, पवित्र देश होता है। उसी देश में पवित्रता, सत्यता, सच्चरित्रता, ईमानदारी का निवास होता है। इस मन्त्र में राजनीति का स्पष्ट निर्देश है। क्षत्र का अर्थ है क्षत्-विक्षत् होते हुए पीड़ित तथा दुःखी जनों की रक्षा और यह तब तक सम्भव नहीं, जब तक शासन-सत्ता की स्थापना न हो जाये। वास्तविकता यह है कि जब ब्रह्मज्ञानी की कोई सुनता न हो, जब ज्ञानी अर्थात् विद्वान् के उपदेश का प्रभाव जनमानस पर न होता हो, तब क्षत्र-विद्या अर्थात् दण्ड-विधान, शासन-सत्ता कार्य करती है। जिन क्षेत्रों में विद्वान् सफल न हो, वहां क्षत्र-विद्या, शासन-सत्ता सफलता प्राप्त करती है। जिन लोगों पर विद्वानों का प्रभाव न हो, जो विद्वानों के उपदेशों से न मानें, उन्हें शासन-सत्ता मनाये। उद्देश्य है - सुव्यवस्था और शान्ति। उसके दो सूत्र हैं- ज्ञान और भय, उपदेश और दण्ड, ब्रह्म और क्षत्र। किसी देश को सुव्यवस्थित, सुखद और शान्तिमय बनाने के लिये ब्राह्मणों, ब्रह्मज्ञानियों, विद्वानों और उपदेष्टाओं के साथ-साथ क्षत्रियों, शासकों की भी आवश्यकता है।

वेद में शासक के गुणों का वर्णन भी किया गया है। वेद शब्द का अर्थ है - ज्ञान, जो क्षत्र-विद्या की आवश्यकता का भी विधान करता है। यह कैसे हो सकता है कि वह क्षत्र अर्थात् शासन-व्यवस्था संचालक के गुणों की चर्चा न करें। अथर्ववेद १/२१/१ में कहा गया है -

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः॥

इस मन्त्र में कहा गया है कि प्रजाओं का शासक 'स्वस्ति' अर्थात् कल्याण देने वाला, दुष्टों, डाकुओं तथा आक्रमणकारियों - 'वृत्त' अर्थात् घेरा डालने वाले वृत्रों को हनन करने वाला तथा 'वि' विद्रोहियों, राष्ट्र-विरोधी तत्वों को 'मृधः' मसल डालने वाला और 'वशी' वशकर्त्ता, वश में रखने वाला होना चाहिए। वह 'सोमपा' शान्तिपालक

शान्ति का रक्षक हो तथा 'अभयङ्कर' अर्थात् भयंकर न हो अर्थात् भयंकर न हो अर्थात् प्रजाप्रिय हो। 'वृषेन्द्र' (वृष+इन्द्र) महा बलवान हो और 'पुरः एतु' आगे चले-जनता का मार्गदर्शक, प्रजा का पथ प्रदर्शक तथा सम्माननीय हो, प्रजा जनों से सम्मान प्राप्त करे। प्रजाओं के पीछे-पीछे अर्थात् उनकी इच्छा पर चलने वाला नहीं अपितु प्रजाओं को अपने पीछे चलाने की योग्यता से युक्त होना चाहिये। कब प्रजाओं का कल्याण, सुख-समृद्धि दे सकेगा ? कब प्रजाओं के आगे चलने, प्रजाओं को अपने पीछे-पीछे ले चलने का अधिकारी होगा ? इस विषय में भी वेद ने अत्यन्त स्पष्ट निर्देश कर दिया है। यजुर्वेद के अध्याय १३ का १५वाँ मन्त्र है -

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता,
यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां,
जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥

इस मन्त्र में 'अग्ने' सम्बोधन का प्रयोग है। अग्नि शब्द - जिसका सम्बोधन में रुप अग्ने बनता है - का अर्थ है आगे चलने वाला, आगे ले चलने वाला। उपर्युक्त मन्त्र में 'विशापतिः' प्रजापालक तथा प्रजाओं के स्वामी अर्थात् शासक राज्याधिकारी को कहा गया है कि हे आगे चलने वाले, तू जब कल्याणकारी नीतियों से युक्त होगा और जब अपनी मूर्धा अर्थात् बुद्धि को ज्ञान से भरपूर करके राष्ट्र-जनता को, प्रजाओं को योग्य जीवनोपयोगी सामग्री प्रदान करने की योग्यता से युक्त होगा, तब समस्त-देश-राष्ट्र को संगठित, सुव्यवस्थित और सुरक्षित रखा सकेगा और तभी संसार-यज्ञ का नेता कहलाने का अधिकारी होगा।

पाठकगण विचार करें कि वेद ने नेतृत्व के गुणों का तथा शासक के कर्त्तव्य कर्मों का उपर्युक्त दोनों मन्त्रों में कितना सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया है ? एक अन्य स्थल पर तो वेद में शासक के लिये अति स्पष्ट शब्दों में निर्देश और चेतावनी दोनों साथ-साथ दिये हैं। वह स्थल अथर्ववेद ३/४/२ में निम्न प्रकार है -

त्वां विशो वृणतां राज्याय, त्वामिमां प्रदिशः पञ्च देवीः।

इस मन्त्र में कहा गया है कि **'इमाः पञ्च प्रदिशः देवीः विशः'** यह पांचों दिशाओं की देवी, दिव्यगुणयुक्ता, बुद्धिमान प्रजायें **"त्वां राज्याय वृणताम्"** तुझको राज्य के लिये, राज्य-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था बनाये रखने और संचालन करने के लिये वरण करतीं, चयन करती है। किसी दिशा विशेष और क्षेत्र विशेष की नहीं और न केवल चारों दिशाओं की ही अपितु मध्य क्षेत्र की प्रजाओं को तेरे द्वारा स्वस्ति, कल्याण, सुख-समृद्धि प्राप्त करने का अधिकार है। वेद के इस स्थल का उद्देश्य जहां शासक के गुणों का निर्देश करना है, साथ ही उसे सावधान कर देना भी है। कारण यह है कि जब शासक के द्वारा किसी क्षेत्र तथा वर्ग विशेष का पक्षपात होता है तो प्रजा में असन्तोष जन्म लेता है, जिसके परिणामस्वरुप राष्ट्र में विद्रोह होता है।

वेद केवल शासक के गुणों तथा कर्त्तव्यों का वर्णन करके तथा उसे चेतावनी देकर ही नहीं बस कर देता है। वेद में तो राज्य संचालन और शासन-व्यवस्था विषयक सम्पूर्ण विज्ञानों का वर्णन है। पशु-वाहन और कृषि-विज्ञान के मूल सूत्र भी वेद में वर्णित है। वेद (इडा) भाषा, (सरस्वती) संस्कृति, (मही) भूमि-इन तीनों की ही चर्चा करता है, जिनके बिना राष्ट्र का अर्थ ही कुछ नहीं।

उक्त परिच्छेद में चर्चित सभी विषयों का शासन-तन्त्र से क्योंकि घनिष्ट और अटूट सम्बन्ध है अतः सभी राजनीति के तत्व हैं। इस लघु लेख में इन सबका विवेचन विषय प्रतिपादन समुचित होते हुए भी असम्भव है। एतदर्थ उपर्युक्त कतिपय मूल तत्वों के साथ-साथ राष्ट्र-रक्षण के समयोपयोगी तत्व सेना विषय भी एक मन्त्र अथर्ववेद (५/२१/१२) से यहां प्रस्तुत करते हैं और तदुपरान्त इस लेख को समाप्त कर देते हैं। मन्त्र है -

एता देवसेनाः सूर्य केतवः सचेतसः।
अमित्रान्नो जयन्तु स्वाहा ॥

जिनका 'सूर्यकेतवः' सूर्यध्वज, सूर्य चिन्हित ध्वज है, वह 'सचेतसः' सतर्क, सावधान रहे। 'नः अमित्रान्' हमारे शत्रुओं का 'जयन्तु' विजयन्तु अर्थात् विजय करें, जीतती रहें। 'स्वाहा' हमारी यही (सु-आह-आ) सुन्दर, उत्तम मांग है। इस मन्त्र में विजयशील सेनाओं का वर्णन है। उन्हें 'देवसेनाः' भी बताया है। 'देवसेनाः' का अर्थ है दिव्यताओं,

दिव्य शास्त्रास्त्रों से सुसज्जित सेनायें। दिव्य शास्त्रास्त्रों को आज की, वर्तमान विज्ञान की भाषा में अणु-अस्त्र, अण्वस्त्र कहते हैं। गुणों की दृष्टि से भी सेनायें दिव्य ही होनी चाहिये। जो सेनायें दिव्यताओं दिव्य-उत्तम गुणों से संयुक्त होंगी, वहीं विजयशीला विजय प्राप्त करने वाली होंगी, जो दुर्गुणों-दुर्व्यसनों में फँसी होंगी, वे विजय का वरण नहीं कर सकेंगी, अपितु सदैव पराजय का ही मुख देखेंगी। इस मन्त्र में यह भी निर्देश है कि वे सतर्क रहें। असतर्कता, असावधानी में रहकर राष्ट्र-रक्षा सम्भव नहीं। यदि सेनाएं सतर्क, सावधान न रहेंगी तो चाहे कितनी भी दिव्यगुणों और दिव्यास्त्रों से युक्त क्यों न हों, वे विजय प्राप्त नहीं कर पायेंगी। अतः सेनाओं को सतर्क सावधान रहना ही चाहिये।

अन्य निर्देशों के साथ-साथ एक निर्देश इस मनत्र में ध्वज विषयक भी है। बताया गया है कि ध्वज सूर्य-चिन्ह से अंकित होना चाहिये। सूर्य नेत्र का पुंज है। ध्वज पर सूर्य-चिन्ह तेज तथा प्रकाश की प्रेरणात्मक होगा। दिव्य सेनाओं के तेज का, शक्ति का प्रयोग प्रकाशपूर्वक, ज्ञानपूर्वक होना चाहिये। कितना सुन्दर प्रतीक वेद ने सेनाओं के लिये, सैन्य ध्वज के लिये स्वीकार किया है। अद्‌भुत महद् अद्‌भुत।

- नई दिल्ली

आर्यों का प्रबल संकल्प

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

भारतीय सनातन आर्यों का सबसे प्रबल एक शक्तिशाली वचन एवम् संकल्प है कि हम समस्त विश्व को आर्य बना दें। आर्य शब्द के अनेक अर्थ हैं जिसमें मुख्य अर्थ है - सभ्य। हम संसार के प्रत्येक प्राणी को सभ्य बना देना चाहते हैं। सभ्यता का अर्थ यदि आजकर का संचारव्यापी अर्थ सम्पन्न, व्याभिचार, तृष्णा, युद्ध तथा परस्पर वैमनस्य मान लें तो आप और हम और कोई भी ऐसा आचरण करता है, "सभ्य" नहीं है, अनादि है। विश्व में केवल आर्य धर्म ही ऐसा है, जिसने अध्यात्म, परलोक, मुक्ति आदि की व्यवस्था एवम् उपदेश तो दिया है, साथ ही उसे कर्त्तव्य की परिधि में भी आबद्ध किया है। स्वच्छंद जीवन अर्थातत मर्यादाहीन जीवन कोई जीवन नहीं है। संसार में अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुये मानव उस स्थिति में पहुंच जाता है कि वह कर्म से ऊपर उठ जाता है और कर्म उसमें लिप्त नहीं होते और न उसे कर्मफल की कोई लालसा रहती है। इस स्थिति को योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता के चतुर्थ अध्याय में इस प्रकार निर्दिष्ट किया है- *न मां कर्माणि लिप्यन्ति न में कर्मफले स्पृहा।* मुक्त व्यक्ति में न तो कर्म रह जाता है और उसका फल। आर्य धर्म ईश्वर पर तथा श्रुति, स्मृति, पुराण आदि पर निर्भर करता है और यह स्पष्ट निर्देश देता है कि अपना कर्त्तव्य करो, वहीं सब कुछ है। उदाहरणार्थ - परोपकार करना पुण्य है और दूसरों का उपकार करना पाप है। यही आर्य धर्म का सार है।

न त्वापन्नहितोन्मुक्ता महात्मनो भवन्ति हि। महापुरुष आपत्ति में पड़े हुए प्राणियों का हित करना कभी नहीं छोड़ते।

पर्व प्रेरणा

वसंतोत्सव बनाम नवशस्येष्टि

श्रीमती सुकान्ती आर्या

यह भारत वर्ष सदा से पर्वप्रिय देश रहा है यहां वर्षभर एक के बाद एक पर्व मनाये जाते हैं। जो भारतीय जनमानस में मिलजुल कर रहने की भावना को उद्दीप्त करते हैं। वस्तुत: ये पर्व उत्साह से अपने कर्त्तव्य में जुटे रहने की प्रेरणा के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर को प्रोन्नत बनाने में अहम् भूमिका निभाते है। पाणिनीय व्याकरण के आधार पर **पृ पालनपूरणयो:** धातु से पर्व शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है **जनान् आनन्देन पूरयतीति पर्व** अर्थात् जनमानस में जो प्रसन्नता व हर्ष का संचार कर दे उसका नाम पर्व है। उड़ीसा में कहावत है,**बार मास रे तेर** **टी** पर्व अर्थात् विश्व में केवल अपना भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहां पर बारह महिने में तेरह पर्वों मनाये जाते है यह इस देश की एक अन्यतम खासियत है उपर्युक्त कहावत के आधार पर उड़ीसा में जिन तेरह पर्व की गणना की जाती है यद्यपि देश में सर्वत्र उन्हीं नामों एवं रूपों में वे पर्व नही मनाये जाते पुनरपि किसी न किसी रूप में अपनी भावनाओं का इजहार तो पर्वो के जरिये करते ही है इस अंतिम सत्य को कौन नकार सकता है ?

देश में मनाये जाने वाले अनगिनत पर्वों में से चार पर्व ऐसे है जो पृथक्-पृथक् अपना अपना विशिष्ट महत्व रखते हैंवे है **श्रावणी उपाकर्म, विजयादशमी, दीपावली,और होली**। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार श्रावणी पर्व ब्राह्मणो का पर्व माना जाता है विजयादशमी को क्षत्रियों का पर्व मानते हैं।दीपावली वैश्यों की मानी जाती है और होली को शूद्रों का पर्व कहा जाता है उपयोगिता को लक्ष्य कर यदि इन बातों का विश्लेषण करें तो स्थिति यह है - मान लिया ब्राह्मणों के लिये श्रावणी उपाकर्म है क्योंकि स्वाध्याय का चातुर्मास्य इसी पर्व से आरंभ होता है। वनों में रहने वाले वानप्रस्थ मुनिगण वर्षा ऋतु की वजह से ग्रामों में आ जाते थे और वेद कथा प्रवचन आदि के द्वारा वर्षाकाल व्यतीत करते थे इस दिन यज्ञोपवीत परिवर्तन करने की प्रथा भी पुराने काल से चली आ रही है इस दृष्टि से यदि इस पर्व के ऊपर ब्राह्मणों की मुहर लगाई जाये तब तो ठीक है। विजयादशमी का औचित्य क्षत्रिय के संबंध में यदि इस आधार पर माना जाय कि विजयादशमी से पूर्व चौमासा होता है वर्षाकाल में आबालवृद्धवनिता सब बड़ी श्रद्धा से महात्माओं के अमृत वचन सुनते थे और वर्षा की समाप्ति पर इस विजयादशमी का आयोजन होता था, जिसमें क्षत्रियगण अस्त्र-शस्त्रों को ठीक करते थे जिनमें जंग लग गया होता था फिर अपने बंधुवान्धवों से अंतिम भेंट करके युद्ध यात्रा में निकल जाते थे ।दीपावली में आमतौर पर देश में लक्ष्मी पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी की प्राप्ति के नये सिरे से योजनायें बनाई जाये, लाभ-हानि को लक्ष्य कर जिनमें लाभ हो उन्हीं व्यापारों का ही अनुष्ठान हो इस प्रकार इस संबंध में कुछ हद तक ये बातें ठीक मानी जा सकती है,परंतु जहां तक होली की बात है कि शूद्रों का है,पर मानते सभी हैं,यह बात अनुचित है होली दीपावली के संबंध में यह जो उपयुक्त मान्यता का दिग्दर्शन मैने कराया है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह जबरदस्ती तुक भिड़ाने की अनर्थक कोशिश मात्र है। वस्तु स्थिति के साथ वास्तव में इन बातों का दूर का भी संबंध नहीं है। निष्कर्षत: वास्तविकता तो यह है कि इस देश में दो प्रकार की फसलें होती है : रबी और खरीफ। ये दोनों फसलें क्रमश: जब कट करके आती थी तो दीपावली एवं होली के पर्व मनाये जाते थे। इन पर्वों को नवशस्येष्टि के रूप में यहां मनाते थे ।नवशस्येष्टि का अर्थ नये अन्न से यज्ञ होता है। आइये इस नवशास्येष्टि बनाम होलकोत्सव अथवा बसंतोत्सव पर पुराकालीन साक्ष्यों के आधार पर जरा चितंन करें हमारे हिन्दू त्यौहार प्रकृति और मौसम के बदलने के साथ-साथ आते जाते रहते हैं ।इस प्रकार होली का पर्व भी वसंत ऋतु के साथ ही आता है। वसंत ऋतु को ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। ऋतुराज वसंत का अविर्भाव हो चुका है वसंत ऋतु के साथ साथ प्रकृति की छटा में भी

परिवर्तन आ गया है ।उसका रूप दिन प्रतिदिन रम्य से रम्यतर होता जा रहा है ।आज वसंत भी अपने पूर्ण यौवन पर है ।वनोपवन में शहर और गांवों में सर्वत्र नयनाभिराम विकास मन को मोद से भर देता है ।चराचर जगत् ने भी इसी आनन्द से प्रफुल्लित होकर नवीन बाना बदल लिया है । उद्यानों में नवविकसित कुसुमों की बहार है । और खेतों में परिपक्व यव और गोधूम के शस्यों की सुनहरी सरिता तरंगित हो रही है । पशुओं ने नवीन रोमावली के चित्र - विचित्र अभिनव परिधान धारण किये हैं । पक्षियों की चारू चहचहाटसे सुन्दर सरसता का संचार हो गया है ।कलकण्ठा कोकिला की कूक मयूर की केका,तरूण तीतर का तारस्वर तथा कपोत का कलरव या कबूतरों की गुटरगूं ,वायुमंडल को मधुरिमासे परिपूर्ण कर रहा है ।मलयाद्रि को धीर सुगंध समीर अठखेलियां करता हुआ चला रहा है ।

ऐसे उदार और मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के शुभागमन की शुभाशा जनता और किसानों के मन में मोद,मौज मस्ती और उल्लास भर देती है इस मास की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ और सिरमौर गिनी जाती है । ऐसे जीवनाधार सर्वपालक शस्य फसल की अवाई पर कृषकों का मन बल्लियों की तरह उछलने लगता है ।ऐसे सुखद अवसर पर आनन्दोत्सव और रंगरेलियां मनाना स्वाभाविक ही है । यह केवल भारत की ही विशेषता नहीं किन्तु सूरीनाम में भी नव शस्य के प्रवेश का उत्सव मनाया जाता है किन्तु यह भारतीय होली का उत्सव केवल अमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्मपरायणता का भी है क्योंकि हिन्दूओं की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता जुड़ी हुई है । शीतकालीन वर्षा के अनन्तर आवासों की परिष्कृति के लिये तथा वसंत की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोध के लिये हवन से वातावरण को शुद्ध करने का अभिप्राय भी है ।गीता में कहा

यज्ञशिष्टाशिन: सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै : ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् नई फसल से सर्वप्रथम यज्ञ किये बिना ही जो व्यक्ति उस अन्न का सेवन कर बैठते है वे केवल पाप ही खाते और इसके विपरित जो यज्ञ भगवान को हवि प्रदान करनें के उपरान्त अन्न का सेवन करते हैं वे सब प्रकार के पापों से छूट जाते है ।गीता के अन्दर एक अन्य स्थान में कहा गया है कि

तैर्दत्तान्नप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः

अर्थात् देवों द्वारा दी गयी वस्तुओं को यज्ञ के माध्यम से उन्हें लौटाकर सीधे सेवन आरंभ करने वाले चोर होते हैं उपर्युक्त तमाम बातों से यह जानकारी मिलती है कि यहां नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली होली में यज्ञों की पवित्र परम्परा रही है आज भी कुछ प्रान्तों में होली के अवसर पर पहले पके चने आदि अग्नि में चढ़ाते है और अर्धपक्व यानी होलक होने पर उसका सेवन करते हैं प्राचीन यज्ञों का यह अपभ्रंश रूप ही है । आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति के अनुरूप पर्वों के पालन करने की ।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त भी आज इन पर्वों में अनेंक विकृतियों और फूहड़पन का प्रवेश हो गया है जैसे दीपावली में जुआ खेलना जबकि वेद में **अक्षैर्मा दीव्य** कहकर इसे घोर निन्दनीय कृत्य बताया गया है ।इसके दुष्परिणामों का इतना विस्तृत चित्रण वेद के अंदर प्राप्त होता है जिसे पढ़कर अनायास इस महान् अनर्थ आचरण के फल का सहज ही परिचय प्राप्त हो जाता है ।

नवशस्येष्टि के रूप में परम पावन यज्ञ के स्थान पर पटाखे आदि छोड़कर वायुमंडल को दूषित करना आदि होली के पवित्र अवसर पर भद्दी गालियां देना रंग छिड़कना आदि पर्व की महत्ता पर तुषारापात करते हैं इन पर्वो की पवित्रता को बचाये रखने के लिये हम सबका नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि हमें अपनी **सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा** की सुरक्षा हेतु इन पर्वों के माध्यम से केवल उन्हीं रीतियों एवं नीतियों का अनुसरण करना चाहिये जिससे अपनी प्राचीन सभ्यता की गौरवमयी झलक प्राप्त हो सके ।

आईये इन प्राचीन पर्वों की गुणवत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हम सभी अपनी योग्यता,क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार बद्धसंकल्प होकर समृद्ध समाज की संरचना में सहभागी बनें ।

पता : - सी.ए.वी. १२/बी, नन्दिनी नगर भिलाई

जीवन दर्शन

नास्तिक

– ओमप्रकाश बजाज

बहुत से लोग अपने आप को नास्तिक कहते हैं, वे कहते हैं कि वे ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते, कई तो ऐसा कहने में एक प्रकार का गर्व भी अनुभव करते प्रतीत होते हैं और कुछ तो मौका बे-मौका किसी न किसी भांति यह बताने का अवसर भी निकाल ही लेते हैं, ऐसा लगता है जैसे अपने आपको नास्तिक बताना अब एक फैशन सा होता जा रहा है, विशेषकर उन लोगों में जो स्वयं को बुद्धिजीवी वर्ग से सम्बद्ध श्रेणी में रखना पसंद करते हैं। अनपढ़ अथवा कम पढ़े लिखे आम लोग तो साधारणतया धर्मभीरु होते हैं, वे तो नास्तिकता की बात सोच भी नहीं सकते। ऐसी बात मन में लाना भी उनके लिए घोर पाप होता है। महिलाओं को तो धार्मिक आस्था घुट्टी में ही पिलाई जाती है। बचपन से ही वह अपनी मां दादी चाची ताई पड़ोसिनों को पूजा अर्चना व्रत उपवास करते देखती हैं और उसी रीति नीति को हृदयंगम कर लेती है, फिर जीवन भर उसे निभाने में लगी रहती हैं।

कुण्ठा, नैराश्य, हार, पराजय, क्षोभ, कष्ट के ज्वार में ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती दे बैठना, नकारना, उस पर प्रश्न चिन्ह लगा देना अलग बात है, ऐसे अवसर पर हम में से प्रत्येक के जीवन में कभी कभार आ ही जाते हैं, किन्तु ऐसा व्यक्ति नैराश्य की चरम सीमा में क्षणिक अथवा सामयिक आवेश के आवेग में वशीभूत ही होता है जो शीघ्र ही धुल पुंछ भी जाता है, आस्था निष्ठा पूरी तरह स्थापित हो जाती है। यह भी एक विचित्र संयोग है कि अपने आप को नास्तिक घोषित करने वालों की पत्नियाँ अकसर ईश्वर और उसकी सत्ता में पूरा पूरा विश्वास और आस्था रखने वाली होती हैं, बल्कि कुछ अधिक ही श्रद्धालु और आस्थावान होती हैं। अक्सर मन में यह प्रश्न सिर उठाता रहता है कि जैसे हम साधारण लोग किसी कठिनाई परेशानी में पड़ने पर ईश्वर को पुकारते हैं, उसकी कृपा अनुकम्पा दयादृष्टि का आव्हान करते हैं, उसे अपना कष्ट क्लेश दुविधा बताकर अपना जी हल्का कर लेते हैं। वैसी परिस्थितियों में हमारे ये तथाकथित नास्तिक भाई क्या करते होंगे। किसे पुकारते होंगे। किससे सहायता की गुहार लगाते होंगे, यह प्रश्न कई बार पूछा भी है मगर कभी, कहीं से भी, कोई संतोषजनक युक्तियुक्त उत्तर नहीं मिला। बस, अक्सर ही ऐसे लोग या तो बात को घुमा ले गए अथवा आंय-बांय-शांय कर के रह गए, कभी कभी लगता है कि शायद ऐसे कुछ लोग नास्तिकता को भी फैशन के रूप में, कुछ अलग दिखाने की भावना से, प्रदर्शित करने का प्रयास मात्र करते हैं।

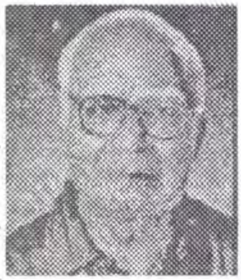

ईश्वर का अस्तित्व तो हर धर्म ने स्वीकारा है, हमारी आस्था हमें हर कदम पर एक संबल प्रदान करती है। जैसे हम परिवार के एक सहृदय बड़े बुजुर्ग के पास जाकर एक अपनी भड़ास निकाल कर मन हल्का कर लेते हैं और ढाढस पा लेते हैं, कुछ वैसा ही हम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास कर के प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त हमारी मान्यता में कोई ऐसी शक्ति तो है जिससे हम अपने कष्टों के निवारण, परेशानियों से निजात, तकलीफों से छुटकारे के साथ-साथ अभिलाषाओं आकांक्षाओं की पूर्ति की आशा तो कर सकें, यदि उसे भी हम नकार बैठेंगे अपनी प्रबुद्धता के दर्प में, तो फिर कहाँ जाएंगे ? क्या करेंगे ?

पता - बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर (म.प्र.)

'शिष्टाचार' जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण कर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना है यही शिष्टाचार और जो इसको करता है वह 'शिष्ट' कहाता है।

पुण्य स्मृति दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य"

छत्तीसगढ़ मनवा कूर्मि क्षत्रिय समाज धमधा राज के ग्राम भिंभौरी में दिनांक ६ एवं ७ फरवरी २०१६ को ७०वाँ महाधिवेशन आयोजित किया गया। यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि महाधिवेशन के महाकुंभ आयोजन में भिंभौरी के पावन धरा में दिनांक ७ फरवरी २०१६ को माननीय डॉ. रमनसिंह मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन के करकमलों द्वारा दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा की मूर्ति का अनावरण किया गया। ग्राम भिंभौरी की यह पुण्य भूमि ऐसे महादानी के पुण्य प्रताप से सिंचित है जो न केवल छत्तीसगढ़ मनवा कूर्मि क्षत्रिय समाज का अपितु पूरे भारतीय सभ्यता एवं आर्य संस्कृति के गौरव हैं। उक्त आयोजन में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, उपप्रधान श्री दयाराम वर्मा और मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा का शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए आत्मीय स्वागत किया गया। कार्यक्रम में कूर्मि समाज के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम वर्मा जी, धमधा राज के अध्यक्ष श्री शिवा चन्द्रवंशी, महिला अध्यक्ष श्रीमती कल्याणी वर्मा, श्री रुद्रकुमार वर्मा केन्द्रीय मंत्री, श्री जनकराम वर्मा विधायक बलौदाबाजार, श्री उमाकान्त वर्मा केन्द्रीय कोषाध्यक्ष, डॉ. रामकुमार सिरमौर, श्री कोदूराम वर्मा धनुर्धर, श्रीमती अनिता वर्मा केन्द्रीय महिला अध्यक्ष, केन्द्रीय युवा अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर परगनिहा, श्री मनोज वर्मा भोला कूर्मि क्षत्रिय छात्रावास रायपुर के कार्यकारी अध्यक्ष, श्री मुनिराम वर्मा, डॉ. जीवराखन वर्मा, डॉ. रामखिलावन वर्मा, श्री तोरणलाल नायक, श्रीमती सत्यभामा वर्मा, श्री मदन कश्यप, श्री जवाहर वर्मा पाटन राज, श्री अरुण वर्मा, श्री एन.पी. टिकरिहा, श्री अर्जुन वर्मा अध्यक्ष चन्दखुरी राज, श्री नरेन्द्र कश्यप राज प्रधान पलारी राज, श्री देवव्रत जी नायक तिल्दा राज, श्री ऋषि कुमार वर्मा रायपुर राज, श्री चोवाराम जी वर्मा राजप्रधान अर्जुनी राज, श्री आशाराम वर्मा पूर्व केन्द्रीय अध्यक्ष तथा श्री देवप्रकाश वर्मा आदि कूर्मि समाज के मूर्घन्य नेता, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दानवीर दाऊ तुलाराम जी परगनिहा का जन्म ग्राम भिंभौरी में राय साहब पिताम्बर परगनिहा के घर में सन् १८६३ में हुआ। केशवराम खांडकपूर के वंश के आठवीं पीढ़ी में दाऊ तुलाराम परगनिहा का जन्म हुआ। पिताश्री पीताम्बर परगनिहा के चार सन्तानों में आप मंझला थे। प्रारंभिक शिक्षा

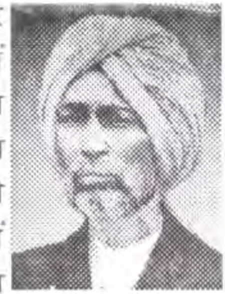

रायपुर में हुई। बचपन से आप मेधावी छात्र रहे। परिवार में धार्मिक वातावरण के परिणामस्वरुप आपकी उच्च शिक्षा धर्म नगरी बनारस यूनिवर्सिटी में हुई और आप बीएससी किये। आप इलाहाबाद से स्नातक बनकर तत्कालीन मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ क्षेत्र के प्रथम स्नातक का गौरव प्राप्त किये। सन् १८९५ में आपकी नियुक्ति तहसीलदार पद पर सागर (म.प्र.) में हुई। अपनी शिक्षा तथा शासकीय सेवाकाल में आप अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में रहे।

आर्यसमाज के समाजसेवा कार्य से आप अत्यन्त प्रभावित हुये। आपके पिता श्री रायसाहब पिताम्बर सिंह ने अंग्रेजो (गोल्ड माइनिंग कंपनी कलकत्ता) से सन् १९२० में सोनाखान जमींदारी २२ गांव को रुपया १८०००/- में क्रय कर लिया था। आपकी दो पत्नियां थीं- महासिर बाई तथा कलावती बाई। आपकी दो सन्तानें हुई एक पुत्री जिसका नाम गुरुदेवी और एक पुत्र जिसका नाम मोक्षेन्द्रनाथ था। अल्प आयु में ही रोगग्रस्त हो जाने के कारण मोक्षेन्द्रनाथ की मृत्यु हो गई। आप पुत्र शोक में अस्वस्थ रहने लगे। पुत्री गुरुदेवी की शिक्षा कन्या गुरुकुल जालंधर (पंजाब) में हुई थी। गुरुदेवी का विवाह कविराज (डॉ.) जगदीशचन्द्र बघेल (ग्राम संकरी, बलौदाबाजार) से हुई थी तथा मुरहुठी ग्राम का सात आना हिस्सा बेटी-दामाद के नाम कर दिये थे। शासकीय सेवा से निवृत्ति के पश्चात् सन् १९२५ में आपने रायपुर जिले के कूंरा (धरसींवा) नामक गांव को रुपया ३०,०००/- में क्रय किया और ग्राम भिंभौरी छोड़कर कूंरा (धरसींवा) में रहने लगे। यहां कूंरा में आने के पश्चात् आपने

संकल्प लिया कि अपनी जायदाद ऐसी संस्था को दान कर देंगे जो इस पिछड़े छत्तीसगढ़ क्षेत्र में संस्कृत विद्यादान, स्त्री-शिक्षा, गुरुकुल, अनाथ रक्षा तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज के सुधार कार्यक्रम को अंजाम दे। अपनी दोनों पत्नियों की परवरिश के लिये ग्राम भिंभौरी का चार आना हिस्सा आपने अपने भतीजे श्री पीलासिंह को दे दिया, परन्तु आपने यह शर्त रखी कि वह स्नातक की उपाधि हासिल करे और सच्चरित्र हो। उपरोक्त शर्तों का पालन करके श्री पीलासिंह जी परगनिहा ने आपकी वसीयतशुदा भूमि पर मालिकाना हक प्राप्त किया।

आपने अपनी इच्छा के अनुरुप शेष जायदाद के दान हेतु दिनांक २४-६-१९२६ को अपने हाथों वसीयत तैयार की। दिनांक २६-६-१९२६ को दुर्ग के प्रसिद्ध मालगुजार एवं नामीगिरामी वकील तथा आर्यसमाज के नेता घनश्यामसिंह गुप्ता के सान्निध्य में वसीयत का पंजीयन करा लिया। वसीयतनामा में गवाह के रुप में आपके भाई दाऊ उदयराम परगनिहा और सोनपैरी वाले मालगुजार हेमनाथ ब्राह्मण के हस्ताक्षर लिये गये। सोनाखान जमींदारी के चार ग्राम - चनाट, कसौंदी, भुसड़ीपाली, बोदापाली के कुल ५५०० एकड़ में से १४०० एकड़ दान में दिए। ग्राम ढनढनी, लवन (बलौदाबाजार) का चार आना, कूंरा (धरसींवा) का ३५० एकड़, ढाबा कुम्ही बोरिया का चार आना हिस्सा को तत्कालीन **"श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश-बरार मुख्यालय नागपुर"** को दान पत्र लिखकर पंजीकरण करा दिये गए। आपने अपनी जायदाद के उपरोक्त गांवों सहित कुल ११ ग्रामों की सम्पत्ति दान में दी जो कि सन् १९२६ में चार लाख रुपये मूल्य की थी। आपने अपने वसीयत में लिखा- "मैं यह अन्तिम वसीयत करता हूँ कि मेरे मरने के बाद मेरी कुल स्थावर तथा जंगम सम्पूर्ण जायदाद का पूरा-पूरा मालिक आर्य समाज संगठन के आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व बरार होगी। मेरी इच्छा है कि आर्य संस्था मेरी जायदाद से छत्तीसगढ़ में विद्यादान की संस्था चलावे, जिसमें स्मरणार्थ मेरा नाम जोड़ दिया जाय और चूंकि 'स्त्री शिक्षा' की इस पिछड़े वनांचल छत्तीसगढ़ क्षेत्र में महती आवश्यकता है, इसलिए छत्तीसगढ़ के केन्द्र में स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय, गुरुकुल जालंधर कन्या महाविद्यालय के नमूने पर चलाई जावे। वसीयत करने के दो माह पश्चात् ६३ वर्ष की आयु में दिनांक २५-८-१९२६ को स्त्री-शिक्षा हेतु अपना सर्वस्व दान देने वाले इस महादानी का महान निर्वाण हुआ।

आपकी इच्छा के अनुरुप दुर्ग नगर में तुलाराम आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिनांक १-७-१९४८ में प्रारंभ की गई। विद्यालय चलाने के लिए भवन आदि निर्माण कार्य के लिये आपकी वसीयत की सम्पत्ति से आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं विदर्भ द्वारा दुर्ग स्टेशन के समीप ४६ एकड़ भूमि क्रय किया गया। वर्तमान में तुलाराम आर्य नगर दुर्ग में २५० से अधिक दुकाने एवं फ्लैट का निर्माण किया गया है और उसके आय से वसीयत के अनुरुप कार्य किया जा रहा है। सन् २००३ से छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित होकर विधिवत गठित होकर कार्यरत है। वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य एवं मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा के साथ पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के समस्त सदस्य दानवीर श्री तुलाराम जी परगनिहा के वसीयत के अनुसार कार्य करने हेतु कटिबद्ध है।

समाज के सब व्यक्तियों का जीवन महकती कस्तूरी सा हो,
जगमगाता हो जीवन और सबका चरित्र सदाचार्य हो।
निश्चित ही हम पूरे विश्व में वेद का डंका बजा देंगे,
यदि हांका लगाने वाले दानवीर तुलाराम आर्य हो॥

- दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

तू सर्वज्ञ सदाशिव सुन्दर, सत्यस्वरुप सुहाता है।
अन्तर पट खुल जाते उसके, पास जो तेरे आता है॥
दुष्ट वासना विकार से, भगवन् सबकी रक्षा कीजे।
पावन पदार्थ पृथ्वी के, परिचर को परमेश्वर दीजे॥
तू है आत्मज्ञान-बलदाता, वेद शास्त्र गुण गाते हैं।
शरणागत हो साधक सत्वर, भवसागर तर जाते हैं॥
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तूझसे लगन लगाने में॥

धर्मवीर पंडित लेखराम

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीविनयों का अवलोकन करने से भलीभांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है वह सब पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यक्तया उपलब्ध होते हैं।

वैदिक धर्म के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर धर्म प्रचार, लेखन, शास्त्रार्थ, शुद्धि तथा विविध कार्यों में जीवन समर्पित कर देने वले पं. लेखराम जैसे धर्मवीर, आर्य जाति के इतिहास में बहुत कम देखने में आते हैं। इनका जन्म १९१५ विक्रमी में जेहलम जिले के एक ग्राम सय्यद्पुर में महता तारासिंह नामक ब्राह्मण के यहां हुआ। बाल्यकाल में उनका अध्ययन फारसी तथा उर्दू के माध्यम से हुआ। यही भाषाएँ उन दिनों पंजाब में पढ़ाई जाती थीं। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। इन्हीं दिनों इनका झुकाव धर्म एवं अध्यात्म की ओर हुआ। वे गीता का नियमित पाठ करते तथा अद्वैतवाद की दार्शनिक विचारधारा का लगातार चिन्तन करते। उन्हें पंजाब के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी विचारक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का भी अवसर मिला। फलतः उनके विचारों में परिवर्तन आया। अब वे ऋषि दयानन्द की विचारधारा से परिचित हुए। १९३७ वि. में पेशावर में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी। अब उन्हें वैदिक धर्म के विषय में अधिक जानने की इच्छा हुई एक मास का अवकाश लेकर वे ऋषि दयानन्द से भेंट करने के लिए अजमेर जा पहुंचे। उन्होंने स्वामी जी के चरणों में सिर नवाया और अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की। जब स्वामी जी महाराज ने इस युवक के सभी प्रश्नों का सम्मानजनक उत्तर दे दिया, तब पं. लेखराम संतुष्ट मन से स्वस्थान पर लौट आए। स्वामीजी ने इस समय उनसे यह भी प्रतिज्ञा कराई कि पच्चीस वर्ष से पूर्व वे हरगिज विवाह नहीं करेंगे। पं. लेखराम ने गुरुवर के इस आदेश को निभाया। पं. लेखराम अब सर्वात्मना धर्मप्रचार में जुट गए। उन्होने धर्मोपदेश नामक एक उर्दू मासिक निकाला। उसमें उच्च कोटि के लेख लिखने लगे। उन दिनों पंजाब में मुसलमानों के एक नये फिर्के अहमदिया सम्प्रदाय (कादियानी) का जोर था। इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को पैगम्बर बताने लगे थे। उनके अनुयायियों की संख्या भी बढ़ रही थी। यद्यपि पं. लेखराम पुलिस सेवा में रहते हुए भी धर्मप्रचार के लिए पर्याप्त समय देते थे, किन्तु १९४० वि. में स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् उन्होने अनुभव किया कि अब सरकारी नौकरी और धर्मप्रचार दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। अतः उन्होने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और धर्मोपदेश को ही अपने जीवन का एकमेव लक्ष्य बनाया।

पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को आलोचना का लक्ष्य बनाया। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्डन में उन्होने अनेक ग्रन्थ निकाले। **'तकजीब बुराहीन अहमदिया'** और 'नुस्खा खब्त अहमदिया' आदि पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। मुसलमानों ने भी कादियानियों की मिथ्या बातों तथा कपोल कल्पनाओं को समझना आरम्भ किया।

जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विधिवत गठन हुआ तो पं.लेखराम उसके उपदेशक बन गए। सभी की ओर से विभिन्न स्थानों पर प्रचारार्थ जाने लगे। उनकी प्रवृत्तियां बहुआयामी थीं। उन्होंने 'आर्यगजट' का सम्पादन किया। विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये, हिन्दू धर्म को छोड़कर या इस्लाम ग्रहण करने वालों को स्वधर्म में रहने के लिए मनाया। जहां जहां से उन्हें प्रचारार्थ बुलाया गया, वहां वहां जाकर उन्होने

लोगों को वैदिक धर्म के तत्वों को समझाया।

इनके अतिरिक्त पं. लेखराम सुयोग्य लेखक भी थे। उन्होंने भारतीय इतिहास, ईसाई तथा इस्लाम धर्म के मूल तत्वों तथा मान्यताओं का विशद अध्ययन किया था, सैमेटिक मतों के मान्य ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया था। इन मतों के वे अधिकृत विद्वान् समझे जाते थे। इसी बीच आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने एक प्रस्ताव स्वीकार कर, ऋषि दयानन्द का विस्तृत एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखवाने का निश्चय किया। इस कार्य को आरम्भ करने के पूर्व यह आवश्यक कि ऋषि जीवन विषयक सभी तथ्यों एवं जानकारियों को एकत्र किया जाता। यह गुरुवर कार्य पं. लेखराम के ही सुपुर्द किया गया। सभा के आदेश को शिरोधार्य कर पं. लेखराम जी स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संकलन करने के लिए देश के विभिन्न भागों में गए। प्रत्यक्षदर्शियों से मिलकर, आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि पत्रों में प्रकाशित ऋषि दयानन्द सम्बन्धी संदर्भ सूचनाओं तथा लेखों को भी एकत्र किया।

इस बहुत संग्रह कार्य को पूरा करने के पश्चात् वे लाहौर आए और जीवनी लेखन का कार्य आरम्भ किया। यह दुर्भाग्य ही था कि असमय में बलिदान मार्ग को पथिक बन जाने के कारण, पं लेखराम की लौह लेखनी से, आचार्यप्रवर का वह विशद जीवनचरित नहीं लिखा जा सका। कालान्तर में पंजाब सभा के प्रधान लाला मुन्शीराम के आदेश से पं. आत्माराम अमृतसरी ने पं. लेखराम द्वारा संगृहीत सामग्री के आधार पर ही इस वृहद् ग्रन्थ को उर्दू में लिखकर पूरा किया।

१९५० विक्रमी में जब उनकी आयु ३५ वर्ष की थी, उन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया और कुमारी लक्ष्मी को अपनी सहधर्मिणी बनाया। उनके एक पुत्र हुआ जो अधिक आयु नहीं पा सका। पं. लेखराम की यह विशेषता थी कि जहां और जिस समय उनकी परिस्थिति की आवश्यकता महसूस की जाती वे अन्य सभी कामों को छोड़कर वहां पहुंच जाते। ऐसा करते समय उन्हें न तो निजी सुविधाओं की ही चिन्ता रहती, न वे यात्रा की कठिनाइयों का ही ख्याल करते। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर के प्रशासक महाराजा प्रतापसिंह, स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा को अपने यहां बुलाकर मांस भक्षण के समर्थन में उनसे कोई व्यवस्था लिखवाना चाहते हैं, तब पं. लेखराम अविलम्ब जोधपुर पहुंचे। उन्होंने पं. भीमसेन को स्पष्ट कह दिया कि यदि उसने लोभ या दबाव में आकर मांस के समर्थन में कोई व्यवस्था दे दी, दो उसे आर्यसमाज की वैदी पर खड़े होने से भी वंचित कर दिया जाएगा और उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी।

बूंदी में जब आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द का पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ होने लगा, तब उनकी सहायता के लिए पण्डितजी को भेजा गया। इस अवसर पर उन्होंने भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर कस्बे में, मुहम्मदी मत की आलोचना में एक तर्कपूर्ण व्याख्यान किया। साधु केशवानन्द नामक एक पौराणिक साधु से शास्त्रार्थ करने के लिए वे हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में गए और वहां पर आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वधर्म को त्यागकर, किसी अन्य मत की दीक्षा लेने के लिए तत्पर लोगों को बचाने के लिए पं. लेखराम सदा सजग रहते थे। जब उन्हें पता चला कि पटियाला रियासत के एक गांव पायल में कोई हिन्दू अपना मत त्यागकर अन्य मत में दीक्षित हो रहा है, तो वे बिना इस बात का विचार किये कि अमुक रेलगाड़ी उस स्टेशन (बाबा पायल) पर ठहरती भी है या नहीं, द्रुतगति रेल में सवार हो गए। जब गाड़ी पायल स्टेशन होकर गुजरने लगी तो लेखराम ने अपना बिस्तर चलती गाड़ी से बाहर फेंका और स्वयं भी कूद गए। उन्हें इस बात की थोड़ी भी चिन्ता नहीं हुई कि उनके शरीर को क्षति पहुंची है। वे तुरन्त स्वधर्म त्याग के लिए तत्पल उस व्यक्ति के निकट पहुंच गए और उससे पूछने लगे कि उसने क्या सोचकर धर्म परिवर्तन का निश्चय किया है ? जब उक्त व्यक्ति को पता चला कि पं. लेखराम तो अपने शरीर पर चोटों को झेलकर केवल उसे बचाने के लिए ही आए हैं, तब उसने परमत-प्रवेश का अपना संकल्प त्याग दिया।

पं. लेखराम जितने उत्तम वक्ता उपदेशक और शास्त्रार्थकर्त्ता थे उसी भांति उच्च कोटि के लेखक भी थे।

उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या ३३ है, जो कुलियात आर्य मुसाफिर नामक वृहद ग्रन्थ में संग्रहित है। इनके एकाधिक अनुवाद हिन्दी में भी हुए हैं। जब १८९७ के वर्ष में पं. लेखराम लाहौर में अपने निवास में रहकर दयानन्द जीवन लेखन का कार्य कर रहे थे, उनके प्राणहरण की चेष्टा सफल हुई। जब वे दिन भर के लेखन कार्य से थककर अंगड़ाई लेते हुए उठे, तो एक काले गठीले तथा हिंसक प्रवृति के पुरुष ने उनकी छाती तथा पेट में छुरे से घातक प्रहार किये। इस आकस्मिक प्रहार से पं. लेखराम के शरीर से खून की धाराएं बह निकली, अंतड़ियां भी बाहर आ गई। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया। जीवन के इन अंतिम क्षणों में भी ईश्वर-विश्वासी लेखराम परमपिता का निरन्तर स्मरण करते रहे। उस समय आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता लाला मुन्शीराम भी उनकी मृत्यु शैया के निकट उपस्थित थे। इस समय अमर हुतात्मा श्री लेखराम ने आर्यजाति को अपना अन्तिम संदेश देते हुए कहा कि आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) तथा तकरीर (व्याख्यान) का काम कभी बंद नहीं होना चाहिए। मर्म स्थलों पर लगे प्रहारों ने उनके जीवन की आशा को समाप्त कर दिया। ६ मार्च १८९७ की रात्रि को इस अमर धर्मवीर का धर्म की वेदी पर बलिदान हो गया। धर्म और सत्य के लिए स्वयं को होम देने वाले पं. लेखराम जैसे सर्वस्य स्वामी पुरुष ही मानवता के प्रकाश स्तम्भ है।

२३ मार्च
बलिदान दिवस

फांसी की बेला पर साथियों को शहीद भगतसिंह का अंतिम पत्र

मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा

भगतसिंह द्वारा फांसी की बेला पर साथी क्रान्तिकारी दुर्गा भाभी को लिखे लम्बे पत्र की कड़ी में, अमर शहीद की लेखनी से उसी बेला में लिखा यह संक्षिप्त पत्र भविष्य की पीढ़ियों को भगतसिंह के जीवन और क्रान्ति-कर्म का अनुकरणीय साक्षात्कार कराता है।

साथियों,

जिन्दा रहने की ख्वाहिश कुदरती तौर पर मुझमें भी होनी चाहिए। मैं उसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा जिन्दा रहना मशरुत सशर्त है, मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जिन्दा रहना नहीं चाहता। मेरा नाम हिन्दुस्तानी इंकलाबी पार्टी का मरकजी निशान बन चुका है और इन्कलाब पसन्द पार्टी के आदर्शों और बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है, इतना ऊंचा कि जिन्दा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियां लोगों के सामने नहीं है। अगर मैं फांसी से बच गया तो वो जाहिर हो जायेंगी और इन्कलाब का निशान मद्धिम पड़ा जायेगा या शायद मिट ही जाय, लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते फांसी पाने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए बलिदान होने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि इन्कलाब को रोकना साम्राज्यवाद की तमाम कोशिशों के भी बस की बात न रहेगी। हाँ, एक विचार आज भी चुटकी लेता है। देश और इंसानियत के लिए जो कुछ हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ हिस्सा भी मैं पूरा नहीं कर पाया। अगर जिन्दा रह सकता तो शायद इनको पूरा करने का मौका मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवा कोई लालच मेरे दिल में फांसी से बच रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कौन होगा ? मुझे आजकल अपने आप पर बहुत नाज है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी इम्तेहां, अन्तिम परीक्षा का इन्तजार है। आरजू है कि यह और करीब हो जाये।

- भगतसिंह

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से एलर्जी का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

आजकल एलर्जी शब्द बहुत ही प्रचलित हो गया है। जिस किसी को आठ-दस दिन बुखार, नजला, खांसी, आंखों से पानी निकलना उसे एलर्जी का शिकार कहा जाता है। रोगी बड़े ही शान से कहता है डॉक्टर साहब कहते हैं आपको एलर्जी हो गयी है। एलर्जी क्या है ? होमियोपैथी का इस विषय में क्या विचार है ? होमियोपैथी में लक्षणानुसार एलर्जी की दवा दी जाती है, होमियो चिकित्सा आकस्मिक एलर्जी एवं जीर्ण एलर्जी दोनों के लिए प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

एलर्जी का क्या रूप है ?

१. ऐसा क्यों होता है कि मिस्टर ए एयरकंडीशंड कमरे में आते ही छींकना शुरु कर देते हैं ?

२. ऐसा क्यों होता है कि मिसेस बी जबभी स्ट्राबेरी फ्लेवर वाला आइसक्रीम खाती है तो अचानक रात में उठकर उन्हें सांस लेनी पड़ती है ?

३. ऐसा क्यों होता है कि मिसेस सी को फलों की खुशबू से सांस लेने में तकलीफ होने लगती है ? अतः ऐसे मरीजों के लिए होमियोपैथ कई प्रकार से चिकित्सा करते हैं।

उदाहरणार्थ :- यदि कोई पदार्थ, किसी स्वस्थ व्यक्ति में एलर्जी किसी भी तरह की पैदा करने में सक्षम हो,तो उसी पदार्थको शक्ति कृत करके औषधि बनाई जाती है एवं उसी प्रकार के लक्षण मिलने पर उपचार किया जाता है।

साधारणतः एलर्जी निम्न प्रखार की होती है -

१. श्वसन तंत्र की एलर्जी :- यह एक प्रकार का मौसमी रोग है जिसमें प्रथमावस्था में सर्दी जुकाम हो जाता है आँख एवं नाक से पानी बहता है, छींके आती रहती है, आँखों में जलन होती है श्वास लेने में अत्यधिक कष्ट होता है, अस्थमा का प्रभाव मध्य रात्रि को अधिक होता है यह वंशानुगत भी हो सकता है। वायु प्रदूषण भी अस्थमेटिक एलर्जी का मुख्य स्त्रोत है। इसमें नाक धीरे-धीरे टपकने लगती है, गला बैठ जाता है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- एलियम सीपा, आर्सेनिक एल्बा, सल्फ्यूरिक एसिड, डुलकामारा, मर्कसाल आदि है।

खाने के पदार्थो की एलर्जी :- होमियो औषधियाँ खाने के द्वारा उत्पन्न होने वाली एलर्जी में भी बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुई है। व्यक्तिकरण से सिद्धान्त पर प्रमुख औषधियाँ दी जाती है। जैसे किसी एक व्यक्ति को मक्खन, गोभी, चर्बीदार चीजें, मांस, केक, प्रोटीन एवं अधिक तेल व घी से बने पदार्थो से तकलीफ होना। दूध पीने से पित्त उछल जाना, अण्डा एवं पके हुए मांस खाने पर एलर्जी चीनी या केन शुगर से एलर्जी आर्टीकेरिया, चमड़ी लाल हो जाती है जिसमें जलन व खुजली होती है। यह शरीर के किसी भी हिस्से पर हो सकती है।

प्रमुख औषधियां :- पल्साटिला, आर्टिका यूरेन्स, फेरममेट, सल्फर, एपिस मेल आदि।

मौसम संबंधी एलर्जी :- कभी कभी अचानक मानसून आ जाता है और व्यक्ति मौसम बदलने के कारण कुछ रोगों के शिकार हो जाते हैं। यह मौसम जन्य एलर्जी है। इस प्रकार की एलर्जी कोई विशेष रोग नहीं है,किसी खाद्य पदार्थ या ऋतु एवं मौसम का अनुकूल न बैठना ही एलर्जी कहा जाता है, और होमियोपैथी में लक्षणानुसार उसका उपचार करना ही एलर्जी का उपचार है।

प्रमुख औषधियाँ :- डुलकामारा, कार्वोबेज, नक्स बेमिका, फेरममेट रसटाक्स आदि।

त्वचा संबंधी एलर्जी :- कई लोग त्वचा के रोगों को मरहम लगाकर दबा देते हैं। इनके दबने से किसी को दमा, किसी को कोई और रोग हो जाते हैं। इस प्रकार त्वचा के रोगी को दवा देने से किसी को एक्जीमा, किसी में आर्टीकेरिया, पित्ती उछलना आदि रोग हो जाते हैं। यह बात निश्चित है कि होमियोपैथिक चिकित्सा द्वारा किसी भी प्रकार की एलर्जी का लक्षणों के आधार पर इलाज किया जा सकता है। यह चिकित्सा पद्धति ऐसी है जिससे रोग से पूर्ण रूपेण से छुटकारा पाया जा सकता है। कई रोगी मेरे उपचार से ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

हास्यम्

एक आदमी डाकखाने में रखे हुए कलम से कोई फार्म भरने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जब वह सरकारी कलम चलने से बिल्कुल इन्कार कर बैठा तो उसने डाकखाने के एक बाबू से पूछा, ''क्या यह कलम बाबाआदम के जमाने का है ?''

''जनाब, पूछताछ, पास वाली खिड़की में कीजिए'', बाबू ने जवाब दिया।

●

एक आदमी जब अपने घर पहुंचा तो उसे बताया कि उसकी पत्नी ने दो लड़कियों को जन्म दिया है, आदमी चैन की सांस लेकर बोला, ''क्या खूब ! ठीक दो बजे मैं घर पहुंचा और दो लड़कियों के होने की खबर मुझे मिली, अच्छा हुआ मैं बारह बजे अपने घर नहीं पहुंचा।''

●●

स्टेशन पर गाड़ी थोड़ी देर ही ठहरी थी, एक मुसाफिर ने गाड़ी के रूकते ही एक बच्चे को, जो मजदूर मालूम पड़ता था, बुलाया और कहा, ''लो, यह चवन्नी ले जाओ, और चार पूरियां खरीद लाओ, दो तुम खा लेना, दो मुझे दे देना।''

जब गाड़ी चलने ही वाली थी तो वह लड़का आया और बोला, ''यह लीजिये अपनी दुवन्नी वापस हलवाई के यहां दो ही पूरियां थीं, वे मैंने खा लीं।''

- लोचन शास्त्री, दुर्ग

●●●

जली होलिका

बनारसी लाल

जली होलिका आज, सभी को दंभ जलाने होंगे।
सुप्त भाव जो ढके राख से पुनः जगाने होंगे ॥
तृष्णा और छल छदम् जलाओ यही आज आह्वान।
स्वार्थ भाव जल जाए इसी में यही पर्व सम्मान ॥
प्रेम भाव बरसाना होगा पुनः जगाकर प्रीत।
आज गुंजाना होगा जग में अमर प्रेम संगीत ॥
शुष्क हृदय में प्रेम भाव के पुष्प खिलाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।
आज स्नेह का रंग घोलकर प्रेम भरी पिचकारी ॥
हम सभी को रंगना होगा कर पूरी तैयारी।
राग द्वेष को त्याग सब द्वन्द भगाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।

●

सदाचार अपनाओ

बाधाओं से मत घबराओ
आगे बढ़ो, बढ़ते ही जाओ,
सदाचार को अपना कर
तुम सबके प्रिय बन जाओ।

कभी न लाओ झूठ हृदय में
कभी न मेहनत से मुंह मोड़ो
भेद-भाव के बंधन तोड़कर
सबसे अपना नाता जोड़ो।

श्रद्धा, सेवा से मन हर लो
जीवन में खुशियाँ भर लो
बनकर नम्र दया के सागर
अपना नाम उजागर कर लो।

- राजकुमार जैन 'राजन',
चित्रा प्रकाशन, आकोला-३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) राज.

समाचार प्रवाह

६७वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न

दुर्ग । डी.ए.व्ही मॉडल हायर सेके. स्कूल आर्य नगर दुर्ग के प्रांगण में ६७वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम किया गया । जिसके मुख्य अतिथि माननीय आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, माननीय श्री हरीश बंसल अध्यक्ष आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई, श्री मोहनलाल चड्ढा संरक्षक आर्यसमाज, श्री विनोद बिहारी सक्सेना प्रधान आर्यसमाज मठपारा, कोषाध्यक्ष श्री बी.एस. ठाकुर, सदस्य आर्यसमाज पं. सेवकराम आर्य भजनोपदेशक, डॉ. साहू, श्री सुजीत खरे उपस्थित रहे ।

मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव जी आर्य ने अपने उद्बोधन में लोगों को देश में गणतन्त्र बनाए रखने हेतु देश के प्रत्येक नागरिक को देश के संविधान के पालन करने का आह्वान किया । इस अवसर पर स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें देश के प्रति देशभक्ति, शिक्षा के प्रति सजगता एवं भाई-चारे का संदेश दिया । इस अवसर पर डी.ए.व्ही. मॉडल स्कूल के प्राचार्या श्रीमती रीता कारकून, प्रभारी श्रीमती मेधा सायखेड़कर, उपप्राचार्य श्री राकेश बम्बार्डे, डी.ए.व्ही. मॉडल बी.एड. कॉलेज के प्रबंधक श्रीमती सरोज तैलंग, प्राचार्य श्रीमती सरोज बघेल एवं स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकायें एवं विद्यार्थी तथा कॉलेज के समस्त प्राध्यापक उपस्थित रहे ।

संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.व्ही. मॉडल हा.से. स्कूल दुर्ग

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'विश्व वेदप्रचारक सम्मान' से विभूषित

दिल्ली । अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् एवं यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को १७ जनवरी १६ को आर्यसमाज रमेशनगर नई दिल्ली ने 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किय । उन्हें यह सम्मान मारीशस में सफल वेदप्रचार कर स्वदेश लौटने एवं वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वैदिक सत्संग समारोह में प्रदान किया गया । सम्मान रुप में उन्हें शाल, माल्यार्पण, सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र विनम्रतापूर्वक आर्यसमाज रमेशनगर के यशस्वी प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य सुमन जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रि. अरुण आर्य जी द्वारा प्रदान किया गया ।

संवाददाता : नरेन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज रमेशनगर नई दिल्ली

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के शोधार्थियों का आर्यसमाज बिलासपुर में हार्दिक स्वागत

बिलासपुर । ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्मारकों के शोध एवं वैदिक भ्रमण में छत्तीसगढ़ के प्रवास पर बिलासपुर पहुंचे ३८ स्नातकों एवं २ अध्यापकों का रविवार २४ जनवरी २०१६ को एक दिवसीय बिलासपुर प्रवास पर आर्यसमाज बिलासपुर में हार्दिक स्वागत किया गया । शोधार्थियों द्वारा मल्हार के ऐतिहासिक स्मारकों के अध्ययन एवं दर्शन पश्चात् रात्रि विश्राम बिलासपुर में किया। दिनांक २५ जनवरी २०१६ को प्रातः ६ बजे सभी शोधार्थीगण बिलासपुर से तालागांव होते हुए सिरपुर (रायपुर) के लिए प्रस्थान किए।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

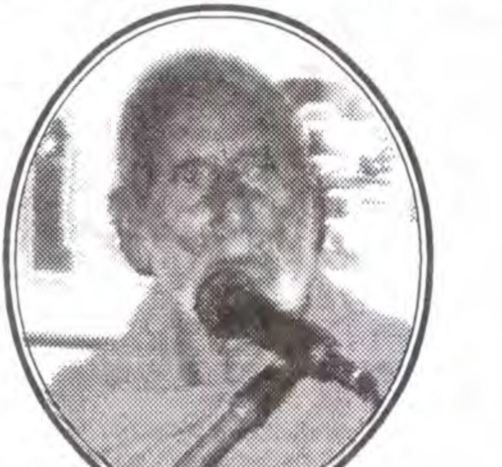

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग

दुर्ग। अत्यन्त शोक का विषय है कि आर्यजगत् के ऐसे मूर्धन्य विद्वान् जो अनेक शिष्यों के मार्गदर्शक रहे, आचार्य बलदेव जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) का स्वर्गवास दिनांक २८ जनवरी २०१६ को हो गया। इस परिस्थिति में रविवार दिनांक ३१ जनवरी २०१६ को यज्ञोपरान्त आर्यसमाज मठपारा के स्वामी श्रद्धानन्द सभागार में समाज के पदाधिकारी तथा समस्त सदस्यों द्वारा शोक सभा आयोजित की गई एवं परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति व सद्गति हेतु प्रार्थना की गई।

संवाददाता : विनीत श्रीवास्तव मंत्री आर्यसमाज मठपारा दुर्ग

आर्यसमाज धमतरी

धमतरी। विदित है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी का आकस्मिक निधन दिनांक २८-१-२०१६ को हो गया, जिसके समस्त आर्यसमाज धमतरी के सदस्यगण, अग्निदेव आर्य प्राथ. शाला एवं डी.ए.व्ही. माध्य. विद्यालय के समस्त शिक्षिकाएँ, कर्मचारीगण एवं समस्त छात्राएं ने भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

संवाददाता : श्रीमती सीमा शिन्दे, आर्यसमाज धमतरी

स्मृति शेष

ओड़िशा। पश्चिम ओड़िशा में वैदिक ज्योत जलाने वाले, गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं वैदिक धर्म ध्वजा के संवाहक, संगीत आदि कलाओं के सच्चे साधक, भावी पीढ़ी के पथप्रदर्शक तथा समाज के सच्चे शिक्षक श्री शेषदेव नायक आर्य का स्वर्गवास दिनांक २२ जनवरी २०१६ को ग्राम नूआँपाली जिला बरगढ़ ओड़िशा में हुआ। अंतिम संस्कार आचार्य वृहस्पति जी एवं स्थानीय विद्वानों के सहयोग से पूर्ण वैदिक विधि विधान से सम्पन्न हुआ। महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति आपकी गहरी निष्ठा थी और इसी मिशन को आगे बढ़ाने में आजीवन लगे रहे। आपके निधन से पश्चिम ओड़िशा के आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। स्नातक परिषद व आर्यजनों की ओर से दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धाञ्जलि।

संवाददाता : प्रेमप्रकाश शास्त्री, रायपुर

स्व. मारुति कुमार गुप्ता को विनम्र श्रद्धाञ्जलि

बिलासपुर। आर्यसमाज सीतामढ़ी कोरबा के वरिष्ठ सदस्य समाजसेवी श्री मारुति कुमार गुप्ता जी का निधन २६ जनवरी २०१६ को प्रातः काल ७४ वर्ष की आयु में हो गया। उनके अंतिम दर्शन के लिए उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रमोद गुप्ता के निवास स्थल बिलासपुर में रखा गया, जहां आर्यसमाज बिलासपुर द्वारा शोकसभा आयोजित कर दिवगंत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की। वे देशभक्ति पूर्णवीर शहीदों की गाथा से प्रेरित होकर आपने मरणोपरान्त शरीर दान की घोषणा की थी। उनका पार्थिक शरीर मेडिकल कालेज बिलासपुर को सौंप दिया गया। आर्यसमाज सीतामढ़ी कोरबा के प्रधान डॉ. लक्ष्मीप्रसाद गुप्त जी के आप अनुज एवं श्री सुधीर जी-सौमित्र जी गुप्ता (बिलासपुर) के चाचा जी थे।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

एक ऐतिहासिक कदम – १०० विकलांग जोड़ों का विवाह

रायपुर। अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद छ.ग. प्रांत, कान्यकुब्ज सभा व शिक्षा मण्डल, मारवाड़ी युवा मंच रायपुर सेन्ट्रल, सीनियर सिटीजन वेलफेयर फोरम रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १४ फरवरी २०१६ को विकलांग युवक-युवती सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। यह विवाह संस्कार समारोह आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के ब्रह्मत्व में सोल्लास सम्पन्न हुआ, जिसमें १०० से अधिक आर्य विकलांग जोड़ों का विवाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। इस समारोह में आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर के समस्त पदाधिकारी व सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर श्री बृजमोहन अग्रवाल कृषि मंत्री छ.ग. शासन, डॉ. डी.पी. अग्रवाल राष्ट्रीय कार्य. अध्यक्ष अ.भा.वि.चे. परिषद, श्रीमती रमशीला साहू महिला बाल विकास एवं समाज कल्याण मंत्री छ.ग. शासन, श्री श्रीचंद सुंदरानी विधायक रायपुर उत्तर विधान सभा, श्री विनय पाठक अध्यक्ष राजभाषा आयोग छ.ग., श्री सदाराम मित्तल समाज सेवी रायपुर, श्री त्रिलोकचंद बरड़िया समाज सेवी रायपुर ने पधारकर नवाविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्य महिला स्वसहायता समूह कोरबा द्वारा अतिवंचित वर्गों में वस्त्रादि वितरण

कोरबा। महिला आर्यसमाज कोरबा के अंतर्गत संचालित आर्य महिला स्वसहायता समूह जिला कोरबा द्वारा पहाड़ी कोरवाओं के ग्रामों में दिनांक १४ फरवरी २०१६ को दोपहर में वस्त्रादि वितरण किया गया। आर्य महिला स्वसहायता समूह जिला कोरबा एक बहुद्देशीय संस्था है जो कि मानव समाज के उत्थान हेतु संकल्पित है। अतः समिति की पिछले बैठकों में यह निर्णय लिया गया था कि संपन्न परिवारों के उन अनुपयोगी वस्त्रादि सामानों को इकट्ठा करके जरुरतमंदो तक पहुंचाया जाए। इसी तारतम्य में आर्य महिला स्वसहायता समूह के सदस्यों ने अपने परिचितों के घरों से बड़ी मात्रा में वस्त्रादि इकट्ठे किए एवं उनको शहर से तीस चालीस किलोमीटर दूर स्थित दूधीटांगर एवं छातीबहार में रविवार १४ फरवरी के दिन वितरण करने पहुंचे। सर्वप्रथम ग्राम दूधीटांगर में सरपंच के सहयोग से ग्रामवासियों को इकट्ठा किया गया। उपस्थित सभी बच्चों महिलाओं एवं पुरुषों को अनेकानेक वस्त्र एवं पादुका प्रदान किए गए। तत्पश्चात् काफिला आगे बढ़ा एवं छातीबहार पहुंचा वहां भी बड़ी संख्या में उपस्थितों को उनके उपयोगी वस्त्र एवं श्रृंगार का सामान प्रदान किया गया। आर्यों के काफिले में मुख्यतः श्रीमती गीता वेदालंकार (संयोजक), श्रीमती विभा गौराहा (उपप्रधान), श्रीमती दिव्या देवांगन (मंत्री), श्रीमती जयश्री आर्या (कोषाध्यक्ष), श्री गोपीराम साहू (प्रधान आर्यसमाज बाल्कोनगर), श्री नरेन्द्र आर्य (सचिव, आर्य शिक्षा समिति), श्री नागेशचंद्र गौराहा (उपसचिव), श्रीमती शैल साहू, श्री प्रमोद सिंह आर्य, श्री दिनेश देवांगन, मास्टर ओम एवं बेबी विधि अन्य ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

संवाददाता : नरेन्द्र आर्य, कोरबा

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– **दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : **'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५**

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं का बिदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं का बिदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण, विद्यालय परिवार व छात्र-छात्रायें

आर्यसमाज कोरबा द्वारा संचालित आर्य महिला स्व-सहायता समूह के द्वारा अतिवंचित परिवारों को वस्त्र वितरित करते हुये आर्यसमाज के पदाधिकारीगण

मार्च 2016
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।